2 शमूएल

1 शाऊल की मौत के बाद दाऊद
अमालेकियों को मारकर सिकलग
लौटा। वहाँ उसे दो दिन हो चुके थे। 2 तीसरे
दिन शाऊल की छावनी में से एक आदमी
आया। उसने अपने कपड़े फाड़ डाले थे और
सिर पर मिट्टी डाली हुयी थी। दाऊद के पास
आते ही उसने ज़मीन पर सिर पर मिट्टी डाली
हुयी थी। दाऊद के पास आते ही उसने ज़मीन
पर गिर कर दण्डवत् किया। 3 दाऊद ने उससे
प्रश्न किया, "तुम कहाँ से आए हो ?" वह
बोला,"मैं इस्राएली छावनी में से बचकर
आया हूँ।" 4 दाऊद ने फिर पूछा, "वहाँ
हुआ क्या? मुझे बताओ।" उसने कहा,"लोग
लड़ाई का मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए है।
बहुत से लोग हताहत होने के साथ शाऊल
और उसका बेटा योनातन भी न रहा। 5 खबर
देने वाले से दाऊद ने सवाल किया,"यह तुम्हें
कैसे मालूम कि शाऊल और योनातान मारे
जा चुके हैं?" 6 यह खबर देने वाले ने कहा,
"अचानक जब मैं गिलबो पहाड़ पर था,
मैंने देखा कि शाऊल अपने भाले के ऊपर
टिका हुआ है। रथ और सवार बड़ी तेजी
से उसकी ओर चले आ रहे थे। 7 फिरकर
उसने मुझे देखा और पुकारा मैंने पूछा, "क्या
आज्ञा।" 8 उसने पूछा, "तुम कौन हो ?" मैंने
उससे कहा, "मैं अमालेकी हूँ।" 9 वह मुझ से
बोला, "मेरे पास आओ, क्योंकि मुझे चक्कर
आ रहा है और मेरी जान नहीं निकल रही
है। तुम मुझे मार डालो।" 10 मुझे मालूम था
कि वह बचेगा नहीं, इसलिए मैंने उसे मार
डाला।" मैं उसके सिर का ताज और कड़ा
यहाँ आपके पास लेकर आया हूँ। 11 तब
दाऊद ने अपने कपड़े फाड़े। उसके साथियों
ने भी वैसा किया। 12 वे सभी शाऊल उसके
बेटों, प्रभु की प्रजा और इस्राएल के घराने
के लिए रोने -पीटने लगे। उन लोगो ने शाम
तक कुछ भी खाना न खाया। 13 फिर दाऊद
ने उस जवान से पूछताछ की, "तुम कहाँ के
हो ?।" उसने कहा, "मैं परदेशी अमालेकी
का बेटा हूँ।" 14 दाऊद ने उसे कहा, "तुमने
प्रभु के अभिषिक्त को कारने से डरे क्यों
नहीं।" 15 तब दाऊद ने एक नवजवान को
आदेश दिया, कि इसे मार डाले। और ऐसा
ही हुआ। 16 दाऊद बोला,"तुम्हारा हत्या का
अपराध तुम्हें ही लगे, क्योंकि तुमने यह
कबूल कर लिया है कि प्रभु ने जन का खून
तुम ही ने किया। 17 तब दाऊद ने शाऊल
के बेटे योनातान के लिए यह विलापगीत
बनाया। 18 उसने यहूदियों को धनुष नामक
गीत दिखाने का आदेश दिया यह याशार
नामाक किताब में पाया जाता है। यह इस
तरह है: 19 हे इस्राएल, तुम्हारा सर्वश्रेष्ठ
तुम्हारी ऊँची जगह पर मारा डाला गया।
हाय, बहदुर लोग कैसे गिर पड़े हैं? 20 गत
में इस बात को न बताओ और न अश्कलोन
की सड़कों पर एलान करना। कही ऐसा
न हो कि पलिश्ती महिलाएँ खुश हों, और
खतनारहित लोगों की बेटियाँ घमण्ड करें।
21 हे गिलबो पहाड़ो, तुम पर ओस न गिरे
और न बरसात हो, न ईनाम के लायक
उपजाऊ खेत होंगे। क्योंकि वहाँ बहादुरों
की ढालें गंदी हो गई और शाऊल की ढाल
बिना तेल लगाए रह गई। 22 जुझे हुओं के
खून बहाने से और बहादुरों की चर्बी खाने
से, योनातन का धनुष न लौटता था, और
न शाऊल की तलवार बिना मारे आती थी।

23 शाऊल और योनातान लोगों को पसन्द
था एक दूसरे से मरते समय भी वे अलग
न हुए। वे उकाब से भी अधिक तेज चलने
वाले और शेर से ज़्यादा ताकतवर थे। 24 “हे
इस्राएली महिलाओ, शाऊल के लिए शोक
मनाओ, वह तुम्हें लाल कपड़े देकर खुश
रखता था वह तुम्हें सोने के गहने पहनाता
था। 25 हाय युद्ध के समय ताकतवर कैसे
काम आए! हे योनातान हे ऊँची जगह पर
जुझने वाले, 26 हे मेरे भाई योनातान, तुम्हारी
वजह से मैं दुखी हूँ। तुम मुझे बहुत अच्छे
लगते थे, तुम्हारा प्यार मुझ पर अजीब, यहाँ
तक कि महिलाओं के प्रेम से बढ़ कर था।
27 हाय, बहादुर कैसे गिर पड़े और युद्ध के
हथियार कैसे बर्बाद हो गए?”

2 इसके बाद दाऊद ने प्रभु से सवाल
किया,“क्या मैं यहूदा प्रदेश के किसी
नगर में जाऊँ?” प्रभु ने जवाब में कहा,
“जाओ।” दाऊद ने पूछा,“किस नगर में?
उन्होंने कहा, हेब्रोन में।” 2 तब दाऊद यिज़्रेली
अहीनोअम और कर्मेली नाबाल की पत्नी
अबीगैल के साथ वहाँ पहुँचा। 3 अपने
साथियों को भी वह परिवार सहित वहाँ
ले गया। वहाँ के गाँव में रहने लगे। 4 तब
यहूदी लोगों ने जाकर दाऊद का अभिषेक
किया, ताकि यहूदा पर शासन कर सके।
5 जब दाऊद को यह जानकारी मिली कि जिन
लोगों ने शाऊल को दफ़नाया था, वे लोग
गिलाद के याबेश के रहनेवाले है, तब दाऊद
ने उन्हें यह कहला भेजा कि, “प्रभु का तुम पर
आशीर्वाद हो क्योंकि तुमने शाऊल को मिट्टी
दी। 6 इसलिए तुम अब कृपा और ईमानदारी
से जियो। मैं भी तुम्हारे इस अच्छे काम का
बदला दूँगा। 7 हिम्मत रखो और सही काम
करो, क्योंकि तुम्हारे मालिक शाऊल का
निधन हो चुका है। और यहूदा के लोगों
ने दाऊद को अपने ऊपर राजा स्वीकार
किया है, 8 शाऊल का सब से बड़ा सेनापति
नेर का बेटा अतनेर था। उसने शाऊल के
बेटे ईशबोशेत को साथ लिया और महनैम
पहुँचा दिया। 9 उसे गिलाद, अशूरियों के देश,
यिज़्रेल, एप्रैम, बिन्यामीन, यहाँ तक कि सारे
इस्राएल पर राजा ठहराया। 10 उस समय
शाऊल के बेटे ईशबोशेत की उम्र चालीस
साल थी, जब उसने कार्यभार संभाला। उसने
दो साल तक राज्य किया। लेकिन यहूदा का
घराना दाऊद की ओर था, 11 और दाऊद
हेब्रोन में यहूदा के घराने पर सात साल छः
महीने तक राजा था 12 नेर का बेटा अब्नेर
और शाऊल के बेटे ईशबोशेत के जन, महनैम
से गिबोन को आए। 13 तब सरूयाह का
बेटा योआब और दाऊद के लोग, हेब्रोन
से निकलकर उनसे गिबोन के पोखरे के
पास मिले। और बैठ गए। 14 तब अब्नेर ने
योआब से कहा, “जवान लोग उठें और हमारे
सामने ही खेलें।” योआब बोला,“हाँ वे उठ
जाएँ। 15 तब वे उठे और बिन्यामीन अर्थात
शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के पक्ष के लिए
बारह आदमियों को चुन लिया। दाऊद के
लोगों में से भी बारह थे। 16 उन लोगों ने
एक दूसरे का सिर पकड़कर अपनी-अपनी
तलवार एक दूसरे के पांजर में भोंक दी। वे
सभी वहाँ ढेर हो गए। इसलिए उस स्थान
का नाम हेल्कथस्सुरीम पड़ गया, जो गिबाने
में है। 17 उस दिन घमासान लड़ाई हुई और
अब्नेर तथा इस्राएल के लोग दाऊद के लोगों
से हार गए। 18 वहाँ योआब, अबीशै और
असाहेल नाम के सरूयाह के तीनों बेटे थे।
असाहेल बनैले चिकार की तरह तेज दौड़ता
था। 19 तब असाहेल ने बिना दाएँ-बाएँ मुड़े
अब्नेर का पीछा किया। 20 पीछे मुड़कर

अब्नेर ने पूछा,“क्या तुम्हारा नाम असाहेल
है?” वह बोला,“हाँ।” 21 अब्नेर ने उससे
कहा,“पीछा करो चाहे तुम दाईं ओर मुड़ो,
चाहे बाईं, किसी जवान को पकड़ो और
उसका हथियार ले लो।” लेकिन फिर भी
असाहेल उसका पीछा करता ही रहा।
22 अब्नेर फिर असाहेल से बोला,“मेरा पीछा
करना बन्द करो, मैं क्यों तुम्हारी जान लूँ
फिर मैं भाई योआब तुम्हारे को अपना मुँह
कैसे दिखा पाऊँगा? 23 इसके बावजूद उसने
हटने से इन्कार किया। तब अब्नेर ने अपने
भाले के पिछले हिस्से से ऐसा मारा कि वह
पेट से आर-पार हो गया और वह मर गया।
वहाँ लोग यह सब देखते खड़े रहे। 24 लेकिन
योआब और यबीशै अब्नेर का पीछा करते
रहे। सूरज डूबने के समय तक वे अम्मा
नामक उस पहाड़ी तक पहुँचे, जो गिबोन
के जंगल के रास्ते में गही के सामने है।
25 बिन्यामीनी अब्नेर के पीछे होकर एक दल
बन गए। वे जाकर एक पहाड़ी की चोटी पर
खड़े हो गए। 26 तब अब्नेर ने ऊँची आवाज़
यो आब को पुकारा, “क्या सदा तलवार जान
लेती रहेगी क्या तुम्हें नहीं मालूम कि इसका
परिणाम दुखदाई ही होगा। 27 योआब ने
कहा,“प्रभु के जीवन की शपथ; कि यदि तुम
बोले होते, तो लोग सुबह ही चले जाते और
अपने अपने भाई का पीछा न किया होता।”
28 तब योआब ने नरसिंगा फूँका ओर सभी
लोग रूक गए और उसके बाद इस्राएलियों
का पीछा न किया और युद्ध भी नहीं किया।
29 उसी रात अब्नेर अपने साथियों के साथ
अराबा से होकर गया। वह यरदन के पार
होकर बित्रोन देश में होकर महनैम पहुँचा।
30 योआब अब्नेर का पीछा छोड़कर लौट
आया। सब लोगों को इकट्ठा करने के बाद
उसने देखा कि दाऊद के लोगों में से उन्नीस
आदमी ओर असाहेल नहीं है। 31 दाऊद के
लोगों ने बिन्यामीनियों और अब्नेर के लोगों
को ऐसा मारना शुरु किया, कि तीन सौ साठ
जान हताहत हुए। 32 उन लोगों ने असाहेल
को उठाकर उसके पिता के कब्रिस्तान में जो
बेतलहम में दफ़ना दिया। तब योआब अपने
लोगों के साथ रात भर चलकर बड़े सवेरे
हेब्रोन पहुँचा।

3 शाऊल और दाऊद के परिवार में एक
लम्बे अर्से तक लड़ाई होती रही। दाऊद
मजबूत होता गया और शाऊल कमजोर।
2 हेब्रोन में दाऊद के बेटे पैदा हुए। उसका
बड़ा बेटा अम्नोन था, जो यिज्रेली अहीनोअम
से पैदा हुआ था। 3 उसका दूसरा किलाब था,
जिसकी माँ कर्मेल नाबाल की पत्नी अबीगैल
थी, तीसरा अबशालोम, जो गशूर के राजा
तल्मै की बेटी से उत्पन्न हुआ था। 4 चौथा
अदोनिय्याह, जो हग्गीत से उत्पन्न हुआ था;
पाँचवां शपत्याह, जिसकी माँ अबीतल थी;
5 छठवाँ यित्राम था, जो एग्ला नाम की दाऊद
की पत्नी से पैदा हुआ। हेब्रोन में यही उसके
बेटे थे। 6 जब शाऊल और दाऊद दोनों के
घरानों के बीच लड़ाई हो रही थी, तब अब्नेर
शाऊल के पक्ष में मदद देकर ताकत बढ़ाता
गया। 7 शाऊल की एक रखेल थी, जिसका
नाम था रिस्पा। वह अय्या की बेटी थी।
इशबोशेत ने अब्नेर से सवाल किया,“तुम
मेरे पिता की रखेल के पास क्यों गए?”
8 ईशबोशेत की इन बातों से अब्नेर गुस्से
में कहने लगे, “क्या मैं तुम्हारे पिता शाऊल
के कुनबे और उसके भाईयों और दोस्तों से
अच्छा व्यवहार करता आया हूँ। मैंने तुम्हें
दाऊद के हाथ भी नहीं पड़ने दिया, फिर उस
महिला के बारे में तुम मुझ पर आरोप क्यों
लगा रहे हो? 9 यदि मैं दाऊद के साथ प्रभु

की शपथ के मुताबिक बर्ताव न करूँ, प्रभु
अब्नेर से वैसा ही यहाँ तक कि उससे ज़्यादा
करे। 10 अर्थात मैं राज्य को शाऊल के हाथ
से ले लूँगा। दाऊद का शासन दान से लेकर
बेर्शेबा तक इस्राएल और यहूदा के ऊपर
रखूँगा। 11 अब्नेर को वह कोई जवाब न दे
पाया, क्योंकि उससे वह डरता था। 12 तब
अब्नेर ने दाऊद के पास कहला भेजा,"देश
है किसका ?" यह भी कहलाया कि, "तुम
मेरे साथ सन्धि (वाचा) कर लो।" 13 दाऊद
बोला,"ठीक है, मैं तुम्हारे साथ वाचा तो
बाधूँगा लेकिन एक शर्त है, वह यह कि तुम
जब मुझ से मिलने आओ, तो शाऊल की बेटी
मीकल को लाना।" 14 फिर दाऊद ने शाऊल
के बेटे ईशबोशेत के पास समाचार भेजा
"मीकल जिसे मैंने एक सौ पलिश्तियों की
खलड़ियाँ देकर अपनाया था, मुझे दे दो।"
15 तब ईशबोशेत ने लोगों को इसलिए भेजा
ताकि लैश के बेटे पतलीएल के पास से छीन
ले। 16 उसकस पति उसके साथ ही गया और
बहूरीम तक उसके पीछे रोता चलता गया।
तब अब्नेर ने उससे कहा,"लौट जाओ" और
वह लौट गया। 17 फिर अब्नेर ने इस्राएल के
बुर्ज़ुगों से कहा, "पहले तुम लोग चाहते थे,
कि दाऊद हमारे ऊपर शासन करे। 18 अब
तुम वही करो, क्योंकि दाऊद के बारे में प्रभु
ने कहा है।" अपने दास दाऊद के ज़रिये, मैं
पलिश्तियों से और दूसरे दुश्मनों से इस्राएल
को आज़ाद करूँगा।" 19 अब्नेर ने बिन्यामीन
से भी बातें की और हेब्रोन चला गया, ताकि
इस्राएल और बिन्यामीनियों को जो अच्छा
लगा, वह दाऊद को बतलाए। 20 तब बीस
आदमियों को लेकर अब्नेर हेब्रोन आया।
तब दाऊद ने उसके और उसके साथियों के
लिए खाना किया। 21 तब अब्नेर दाऊद से
बोला, "मैं जाऊँगा और अपने मालिक राजा
के पास सभी को इकट्ठा करूँगा। ताकि वे
तुम्हारे साथ वाचा बान्धे और तुम अपने मन
से राज्य कर सको। तब दाऊद ने अब्नेर
को जाने दिया और वह चला गया। 22 तब
दाऊद के साथ, योआब के साथ कहीं हमला
करने गए। वहाँ से बहुत लूट लेकर आ गए।
उस समय अब्नेर दाऊद के साथ हेब्रोन में
न था। 23 योआब और उसकी फ़ौज के वहाँ
पहुँचने पर लोगों ने बताया, "नेर का बेटा
अब्नेर राजा से आकर मिला था, लेकिन
उसने उसे विदा कर दिया और वह चला
गया। 24 तब योआब ने राजा के पास आकर
कहा,"तुमने यह क्या किया है? उसे तुमने
क्यों जाने दिया ? 25 क्या तुम नहीं जानते हो
कि सब जाँच पड़ताल करने और तुम्हें ठगने
आया था? 26 योआब ने तभी दूत भेजे और
उसे सीरा नामक तालाब से वापस ले आया
गया। यह बात दाऊद को न मालूम पड़ी।
27 जब अब्नेर हेब्रोन वापस आ गया, तब
योआब उसे अकेले में ले गया और अपने
भाई अरमहेल के खून के बदले उसकी जान
ले ली। 28 दाऊद को यह समाचार मिलते
ही वह बोल उठा,"मैं और मेरी प्रजा अब्नेर
के खून के लिए प्रभु के सामने हमेशा दोषी
ठहरेंगे।" 29 यह दोष योआब और उसके
परिवार के लोगों पर लगे और उसके परिवार
में सदा कोई न कोई डाइबिटीज़ का मरीज़
कोढ़ी, बैसाखी लेकर चलने वाला तलवार
से खेत आने वाला और भूख से मरने वाला
हो।" 30 योआब ने और उसके भाई अबीशै
ने अब्नेर को इस वजह से मार डाला था,
क्योंकि उसने उनके भाई असाहेल को गिबोन
के युद्ध में मार दिया था। 31 तब दाऊद ने
अपने साथियों और योआब से कहा,"अपने
कपडे फाड़कर और कमर में टाट बान्धकर
अब्नेर के आगे-आगे चला। दाऊद खुद भी

अर्थी के आगे -आगे चलता जा रहा था।
32 अब्नेर को हेब्रोन ही में दफ़ना दिया गया।
राजा के साथ उसके लोग भी विलाप करते
रहे। 33 तभी दाऊद ने अब्नेर के लिए एक
विलापगीत लिखा;“क्या यह सही था कि
अब्नेर एक मूर्ख की तरह मरे? 34 न तो
तुम्हारे हाथ बाँध गए, और पाँव में बेड़ियाँ
पड़ीं; जैसे कोई बुरा आदमी मारा जाता है, तू
मारा गया।” यह सुन लोग फिर से रोने लगे।
35 लोगों ने कोशिश की, कि दाऊद खाना खा
ले, लेकिन उसने प्रण करके कहा,“यदि मैं
सूरज के डूबने से पहले कुछ खाऊँ, तो प्रभु
मुझ से ऐसा, वरन इससे ज़्यादा करे। 36 वह
सुनकर सभी खुश हुए। राजा की बात से
वैसे भी लोग राज़ी हो जाया करते थे। 37 उस
दिन सभी लोग जान गए कि अब्नेर का मारा
जाना दाऊद की ओर से नहीं था। 38 तब राजा
अपने कार्यकर्ताओं से बोला,“क्या तुम्हें नहीं
मालूम कि आज इस्राएल में एक वीर योध्दा
मर चुका है? 39 मुझे हालाँकि राजा होने के
लिए अलग किया जा चुका है, लेकिन मैं
कमज़ोर हूँ। सरूयाह के बेटे मुझ से ज़्यादा
ज़ोरावर है। लेकिन बुरा करने वाले को प्रभु
उसी के बराबर सज़ा दें।”

4 जब शाऊल के बेटे को पता लगा, कि
अब्नेर हेब्रोन में मार दिया गया, तो
वह हैरान हो गया। सारे इस्राएली भी घबरा
गए। 2 शाऊल के बेटे के दो जन थे, जो
दलों के मुख्य थे। उनमें से एक का नाम
था बाला और दूसरे का रेकाब। ये दोनों
बेरोतवासी बिन्यामीनी रिम्मोन के बेटे थे।
3 बेरोती लोग गित्तीम को भाग गए थे। और
वहीं रहे। 4 शाऊल के बेटे योनातान का एक
लंगड़ा बेटा था। जब यिज्रेल से शाऊल और
योनातान के मरने की खबर आई थी, तब
वह पाँच साल का था। उस वक्त उसकी देख
रेख करने वाली महिला उसे लेकर भागी।
तभी वह गिर पड़ा और लंगड़ा हो गया। उस
का नाम मपीबोशेत था। 5 उस बेरोती रिम्मोन
के बेटे रेकाब और बाना कड़ी धूप के समय
ईशबोशेत के घर में, जब ईशबोशेत दोपहर
को आराम कर रहा था आए, 6 गेहूँ ले जाने
के बहाने घर में घुस गए और उस पर हमला
किया। तभी रेकाब व बाना भागे। 7 उसके
घर पर घुसने पर वह चारपाई पर सो रहा
था। उन्होंने उसे मारा, सिर काट लिया और
सिर लेकर रात ही में अराबा होकर चल
दिए। 8 दाऊद को वह सिर दिखाते हुए वे
बोले, देखो, शाऊल जो तुम्हारा दुश्मन था,
उसके बेटे ईशबोशेत का यह सिर है। आज
प्रभु ने शाऊल और उसके वंश से मरे प्रभु
राजा का बदला ले लिया है।” 9 दाऊद ने
बेरोती रिम्मोन के बेटे रेकाब और उसके
भाई बाना को जवाब दिया। “जो प्रभु आज
तक मुझे बचाते आए हैं, उसके जीवन की
शपथ, 10 जब किसी व्यक्ति ने सिकलग में
मुझ को शाऊल के मरने का समाचार दिया,
तब मैंने उसे मार डाला। उसको मैंने यह ईनाम
दिया था 11 फिर जब दुष्ट लोगों ने एक निर्दोष
व्यक्ति को उसी के घर में, उसकी खाट पर
ही मार डाला, तो मैं ज़रूर उसके खून का
बदला तुम से लूँगा। और तुम्हें इस दुनिया से
मिटा डालूँगा। 12 तब दाऊद के आदेश पर
उनको मार कर, उनके हाथ-पाँव काट दिए
गए। उनकी देह को हेब्रोन के पोखरे के पास
टाँग दिया। अन्त में ईश्बोशेत सिर को हेब्रोन
में अब्नेर की कब्र में गाड़ दिया।

5 तब इस्राएल के सभी गोत्र दाऊद के
पास हेब्रोन आकर कहने लगे,“सुनो,
हम और तुम एक ही मिट्टी के बने हैं। 2 फिर

पुराने समय में जब शाऊल हम पर राज्य
कर रहा था, तब भी इस्राएल का अगुवा
तुम ही थे। तुम ही से प्रभु ने कहा, “मेरी
प्रजा इस्राएल के चरवाहा और मुखिया तुम
ही होगे।” 3 इसलिए सभी इस्राएली बुज़ुर्ग
हेब्रोन में राजा के पास आए। वहीं दाऊद ने
उनके साथ वाचा बान्धी। और इस्राएल का
अगुवा राजा होने के लिए उन्होंने दाऊद का
अभिषेक किया। 4 दाऊद की उम्र तीस साल
थी, जब उसने राजपद सम्भाला। वह चालीस
साल तक शासन करता रहा। 5 हेब्रोन में
यहूदा पर और तैंतीस साल तक यरूशलेम मैं
पूरे इस्राएल और यहूदा पर। 6 एक दिन राजा
ने अपने साथ लोगों को लेकर यबूसियों पर
हमला बोल दिया। वे लोग उसी देश के रहने
वाले थे वे सोच रहे थे कि दाऊद वहाँ दाखिल
न हो पाएगा। इसलिए वे बोले,“जब तक तुम
अन्धों और लंगड़ों को हटा न दो, तुम यहाँ
दाखिल न हो सकोगे।” 7 फिर उस ने सिय्योन
नामक किले को ले लिया, जिसे दाऊदपुर
कहा गया। 8 उस दिन दाऊद बोला,“जो
यबूसियों को मारना चाहता है, वह नाले
के चढ़े और और अन्धों-लंगड़ों को मारे
जिन्हें मैं नहीं चाहता हूँ। तभी से यह कहावत
शुरु हो गईः “अन्धे और लँगड़े भवन में न
आएँ।” 9 दाऊद उसी किले में रहने लगा।
दाऊद ने चारों तरफ मिल्लो से लेकर अन्दर
की ओर शहरपनाह बनवाई। 10 लोग दाऊद
की बड़ाई करते थे। वह प्रभु की मौजूदगी से
आशीषित था। 11 फिर सोर के राजा हीराम
ने दाऊद के पास दूत, देवदार की लकड़ी,
बढ़ई और राजमिस्री भेजे। उन लोगों ने दाऊद
के लिए एक इमारत बनवाई। 12 दाऊद को
यकीन हो गया कि प्रभु ने उसे इस्राएल पर
शासन का अधिकार दिया है और दायरे
को बढ़ाया है। 13 हेब्रोन से आने के बाद
उसने यरूशलेम की और रखैल रख लीं और
पत्नियाँ भी। उसके तमाम बेटे-बेटियाँ हुए।
14 यरूशलेम में होने वाली उसकी सन्तान ये
हैः शम्मू, शोबाब, नातान, सुलैमान, 15 यिमार
एलोशू, नेपेग, यापी 16 एलीशामा, एल्याहा
और उलीपेलेत 17 जब पलिश्तियों के कान
तक यह बात पहुँची कि इस्राएल का राजा
होने के लिए दाऊद ठहराया गया है, तब
सभी पलिश्ती दाऊद को ढूँढने निकल पड़े।
दाऊद को यह मालूम होते ही वह गढ़ में
चला गया। 18 तभी पलिश्ती आकर रपाईम
नामक तराई में फैल गए। 19 तब दाऊद ने
प्रभु से सवाल किया,“क्या मैं पलिश्तियों
पर हमला बोलूँ? क्या मुझे जीत मिलेगी?”
प्रभु का जवाब था “कर दो हमला, क्योंकि
ज़रूर तुम्हें जीत दिलवाऊँगा।” 20 तब दाऊद
बालपरासीम गया। उसने उन्हें वही हताहत
किया। तब वह बोला,“प्रभु मेरे सामने ही
पानी के बहाव की तरह मेरे दुश्मनों पर
भारी पड़े हैं। इसीलिए उस जगह का नाम
बालपरासीम हो गया था। 21 अपनी मूरतों
को लोगों ने वहीं हटा दिया और दाऊद व
साथी उन्हें उठा ले गए। 22 दूसरी बार फिर
पलिश्ती हमला करके रपाईम नामक तराई
में फैल गए। 23 इस बार जब दाऊद ने प्रभु
से चढ़ाई करने के बारे में जब पूछा, तो
प्रभु ने मना कर दिया। उन्होंने कहा,“पीछे
से घूमकर जाना और तूत के पेड़ों के सामने
से छापा मारना। 24 जब तुम तूत के पेड़ों की
फुनगियों में से फ़ौज के चलने की आवाज़
सुनो, तब जल्दी करना, क्योंकि प्रभु तभी
पलिश्तियों को मारने के लिए मौजूद होंगे।”

25 इस आदेश का पालन करने से दाऊद गेबा
से लेकर गेज़ेर तक पलिश्तियों को खतम
करता गया।

6 दाऊद ने इस्राएल में से तीस हज़ार
बहादुर लोगो को छाँट लिया। 2 वे
सभी बाले नामक जगह की ओर चल पड़े,
ताकि प्रभु का नक्शा ले आएँ। यह बक्सा
करूबों पर विराजने वाले सेनाओं के प्रभु
का कहलाता है। 3 उस बक्से को उन्होंने
नई गाड़ी पर रखा और टीले पर रहने वाले
अबीनादाब के घर से निकाला। तभी गाड़ी
हाँकने का काम, अबीनदाब के बेटे-उज्जा
और अह्यो कर रहे थे। 4 घर से निकालने
के बाद अहह्यो आगे-आगे चलता गया।
5 दाऊद और इस्राएली प्रभु के आगे सनौवर
की लकड़ी से बने हर तरह के बाजे, वीणा,
सारंगियाँ, डफ, डमरू और झाँझ बजाते जा
रहे। 6 नाकोन के खलिहान के पास पहुँचते
ही उज्जा ने अपना हाथ प्रभु के बक्से को
संभाल लिया क्योंकि बैलों को ठोकर लग
गई थी। 7 तभी प्रभु को गुस्सा आया और
उन्होंने उसकी जान ले ली। 8 प्रभु की यह
बात दाऊद को अच्छी नहीं लगी, इसलिए
उस जगह का नाम पेरसुज्जा रख दिया।
9 उस दिन दाऊद को डर लग गया और
कहने लगा,“मैं बक्से को अपने यहाँ कैसे
ला सकूँगा?” 10 इसलिए उसने गत में रहने
वाले ओबेदेदोम के घर पहुँचा दिया। 11 प्रभु
का बक्सा, उसके घर में तीन महीने तक
रहा और उसे तथा उसके परिवार ने प्रभु
की भलाईयों को चखा। 12 यह समाचार जब
दाऊद को मिला, तो वह जाकर बक्से को
लाया और दाऊदपुर में रख दिया। 13 जब प्रभु
का बक्सा उठाने वाले छ: कदम बढ़ चुके
थे, तभी दाऊद ने एक बैल और एक पाला
हुआ बछड़ा कुर्बान किया। 14 प्रभु के सामने
उस दिन दाऊद तन-मन से नाचता रहा 15 इस
तरह दाऊद और इस्राएली प्रभु के बक्से की
खुशी मनाते, नरसिंगा फूँकते ले चले। 16 उस
समय शाऊल की बेटी मीकल ने खिड़की
दाऊद को नाचते देखा और मन ही मन तुच्छ
समझा। 17 दाऊद द्वारा खड़े किए गए तम्बू
में बक्से को रखा गया। तब उसने होम बलि
और मेल बलि चढ़ाई। 18 उसके बाद प्रभु की
आर से सभी को आशीर्वाद दिया। 19 वहाँ
इकट्ठे सभी लोगों को उसने एक रोटी, माँस
का एक टुकड़ा और किशमिश की टिकिया
बँटवायी और लोग अपने-अपने घर चले
गए। 20 इसके बाद दाऊद अपने परिवार को
आशीर्वाद देने के लिए लौटा। तभी दाऊद
से मिलने के लिए शाऊल की बेटी मीकल
बाहर आई और बोला, आज इस्राएल का
राजा नाचते नाचते कैसे वस्त्रहीन हो गया
था। वह कितना शक्तिशाली दिख रहा था
?” 21 दाऊद ने मीकल से कहा,“प्रभु, जिसने
तुम्हारे पिता और उसके पूरे परिवार के बदले
मुझे चुना और इस्राएल का राजा होने के
लिए ठहराया; उनके सामने मैं नाचा हूँ और
नाचा भी करूँगा। 22 मैं इससे ज़्यादा तुच्छ
ठहराए जाने को तैयार हूँ? जिन दासियों के
बारे में तुमने कहा है, वे भी मुझे इज़्जत देंगी।
23 जीवन के अन्त तक मीकल के कोई बच्चा
न हुआ।

7 जब राजा अपने भवन में रहता था और
चारों ओर से उसे शान्ति मिली थी।
2 तब नातान नबी से उसने कहा,“मैं देवदार
से बने घर में रह रहा हूँ, लेकिन प्रभु का
बक्सा तम्बू में है।” 3 नातान बोला,“जो कुछ
तुम्हारे मन में इरादा उसे पूरा करो, प्रभु
तुम्हारे साथ हैं।” 4 उसी रात नातान के पास

प्रभु का सन्देश आया,“मेरे दास दाऊद से
कहो, क्या वह याहवे के लिए घर बनाना
चाहता है? जिस दिन से मैं कभी किसी घर
में नही रहा। मैं तम्बू में अपनी उपस्थिति
देता रहा हूँ।” 5 जाकर मेरे दास दाऊद से
कहो, याहवे यह पूछते हैं, कि तुम मेरे लिए
क्या निवास-स्थान बनाओगे? 6 जिस दिन से
मैं इस्राएलियों को मिस्र से निकाल लाया,
आज के दिन तक मैं कभी घर में नहीं रहा
7 मैं इस्राएलियों के साथ बहुत सालों से रहा
हूँ। कभी मैंने किसी कबीले से ऐसी कुछ
शिकायत की है, कि तुमने मेरे लिए देवदार
का घर नहीं बनाया? 8 इसलिए तुम मेरे दास
से कहना, “सेनाओं का प्रभु कहते हैं, तुम्हें
मैंने भेड़शाला और भेड़ बकरियों के पीछे
फिरने से इसलिए अलग किया, ताकि मेरे
लोगों की देखभाल करो (प्रधान) 9 तुम जहाँ
कहीं आए गए तुम्हारे दुश्मनों को बर्बाद
किया। दुनिया के बड़े-बड़े लोगों के बीच
में तुम्हें मशहूर कर दूँगा। 10 अपने लोगों के
लिए मैं एक जगह ठहराऊँगा, कि वह हमेशा
बनी रहे और बुरे लोग जिस तरह से उसे
दुख देते आए हैं, फिर न दे सकें, 11 वरन
मैं उस समय से 12 तुम्हारी उम्र हो जाने के
बाद तुम्हारे वंश को और राज्य को बना कर
रखूँगा। 13 वही मेरे नाम का घर बनवाएगा।
मैं उसकी राजगद्दी को सदा के लिए स्थिर
करूँगा। 14 मैं उसका पिता होऊँगा और वह
मेरा बेटा। यदि वह बलवा करे और जो करना
है न करे, तो मैं उसे डाँट -डपट के साथ
सज़ा तक दूँगा। 15 लेकिन मेरी दया उस पर
से ऐसा नहीं हटेगी, जैसे मैंने शाऊल पर से
हटा ली थी। और उसको तुम्हारे आगे से दूर
किया था। 16 लेकिन तुम्हारी गद्दी, राज्य और
घराना हमेशा तक बना रहेगा। 17 इस सभी
बातों और दर्शन के अनुसार नातान ने दाऊद
को समझाया। 18 तब दाऊद ने अन्दर जाकर
प्रभु से कहा,“हे मालिक, मैं क्या कह सकता
हूँ, मेरा परिवार भी क्या है, कि आपने मुझे
यहाँ तक पहुँचाया है?” 19 फिर भी हे प्रभु
परमेश्वर यह तो बड़ी बात है, कि आपने मेरे
परिवार (घराने के भविष्य के बारे में भी बता
दिया है, प्रभु ऐसा तो इन्सान ही किया करते
हैं। 20 आप से दाऊद कह ही क्या सकता
है? हे प्रभु आप अपने दास को जानते हैं।
21 आपने अपने कही बात के मुताबिक और
मन के हिसाब से यह बड़ा काम किया है,
ताकि मैं उसे जान सकूँ। 22 इस कारण, हे
प्रभु परमेश्वर आप महान हैं। हमने जो कुछ
सुना है, उसके अनुसार आप से कोई भी
मेल नहीं खाता है। और न ही आपको छोड़
कर कोई प्रभु है। 23 इस्राएल की प्रजा की
तरह भी और कौन लोग हैं? वहीं ऐसे लोग
दुनिया में हैं, जिन्हें प्रभु ने अपनी प्रजा बनाने
के लिए आज़ाद किया है, ताकि उनका नाम
महिमा पाए। और यह भी कि आप जिन्होंने
मिस्रियों और नेताओं से छुड़ाया, उनके लिए
बड़े काम करे। 24 आपने इस्राएल को सदा
के लिए अपनी प्रजा होने के लिए अलग
किया था। आप ही उसके प्रभु हैं। 25 अब
हे, प्रभु परमेश्वर जो बातें आपने मेरे और
मेरे परिवार के बारे में कही थीं, उन्हें पूरा
कीजिए। 26 ऐसा ही कि लोग हमेशा आपके
नाम को ऊँचा उठाएँ, सेनाओं के प्रभु इस्राएल
के ऊपर प्रभु हैं और मेरा घराना आपके
सामने सदैव बना रहे। 27 क्योंकि आप ही
ने यह बताया था कि मेरा घर बना रहेगा।
इसीलिए मुझे यह बिनती करने की हिम्मत
हुई है। 28 अब हे प्रभु परमेश्वर आप प्रभु हैं।
आप सच ही बोलते हैं। आपने भलाई करने

का वायदा किया है। 29 इसलिए अब खुश
होकर आशीर्वाद दें कि मैं लम्बे समय तक
बना रहूँ। आपने ऐसा ही कहा था।

8 इसके बाद दाऊद ने पलिश्तियों को
हरा कर अपने अधीन में कर लिया।
उनकी राजधानी को भी अपने अधिकार में
कर लिया। 2 फिर मोआबियों की भी उसके
जीत लिया और ज़मीन पर उन्हें लिटाकर
नापा और मारा। डोरी भर के लोगों को उसने
छोड़ दिया तब मोआबी उसके लिए ईनाम
लाने लगे। 3 जब सोबा का राजा, रहीब का
बेटा हददेजेर महासागर के पास अपना राज्य
बनाना चाहता था, तब दाऊद ने उसको जीत
लिया। 4 दाऊद ने उस से एक हज़ार सात
सौ सवार, बीस हज़ार सिपाही छीन लिए।
सभी रथ वाले घोड़ों के घुटनों के पीछे की
नस कटवा दी थी। लेकिन एक सौ रथ के
लिए घोड़ों को बचा रखा। 5 जब दमिश्क
के अरामी सेना के राजा हददेजेर की मदद
करने को आए, तब दाऊद ने अरामियों में
से बाईस हज़ार आदमियों को मारा। 6 तब
दाऊद ने दमिश्क के अराम में सिपाहियों
की चैकियाँ बैठाई। इस तरह अरामी दाऊद
के अधीन हो गए और ईनाम लाने लगे।
जहाँ-जहाँ दाऊद गया, वहाँ प्रभु ने उसे जीत
दिलाई। 7 हददेज़र के कार्यकर्ताओं के पास
सोने की जो ढालें थी, उन्हें यरूशलेम ले
आया। 8 बेतल और बरौतै नामक हददेजेर
के नगरों से दाऊद राजा ढेर सा पीतल
लाया। 9 जब हमात के राजा तोई को यह
मालूम हो गया कि दाऊद ने हददजेर की
पूरी फौज को जीत लिया है। 10 तब तोई
ने योराम नामक अपने बेटे को राजा दाऊद
का हाल-चाल जानने के लिए भेजा। इसलिए
कि वह जीत के लिए उसे बधाई दे। योराम
अपने साथ चाँदी, सोने और पीतल के बर्तन
भी लाया। 11 प्रभु के काम के लिए दाऊद ने
इन्हें अलग किया। उसने जीत में पाई चाँदी
और सोने को भी अलग किया। 12 अरामियों,
मोआबियों, अम्मोनियों, पलिश्तियों, और
अमालेकियों के सोने-चाँदी को, रहोब के बेटे
सोना के राजा हददेजेर की लूट को भी रखा।
13 जब दाऊद लोमवाली तराई में अट्ठारह
हज़ार अरामियों को जान लेकर आया, तब
वह मशहूर हो गया। 14 फिर उसने एदोम में
सिपाहियों की चौकियाँ बनवाई। सारे एदोमी
लोगों ने दाऊद को अपना अधिकारी बनने
दिया। जहाँ-जहाँ दाऊद गया, जीत हासिल
करता गया। 15 पूरे इस्राएल पर दाऊद शासन
कर रहा था। वह ईमानदारी और सच्चाई
के काम करता था। 16 योआब उस समय
फ़ौज का मुख्य सेनापति था। इतिहास लिखने
वाला अहीलूद का बेटा यहोशापात था।
17 महा पुरोहित अहीतूब का बेटा सादोक
और एब्यातार का बेटा अहीमेलेक पुरोहित
थे और मन्त्री सरायाह था। 18 करेती लोगों
और पलेतियों का मुखिया यहोयादा का बेटा
बनायाह था। दाऊद के बेटे भी मंत्री बनाए
गए थे।

9 एक दिन दाऊद ने प्रश्न किया, “क्या
शाऊल के घराने में से अब तक कोई
बाकी है, जिस से मैं योनातान के कारण प्रेम
दिखा सकूँ? 2 शाऊल के परिवार का एक
जिसका नामा था, सीबा। राजा के पास उसे
लाने पर पूछा गया,“क्या तुम ही सीबा हो
?” उसने जवाब में कहा, “हाँ मैं ही हूँ।”
3 राजा ने पूछा, “क्या शाऊल के परिवार में
से कोई बचा है, जिसको मैं प्रभु की तरह
प्रेम दिखा सकूँ?” सीबा बोला,“हाँ योनातान
का एक बेटा बचा है, जो अपंग है। 4 राजा

ने उसके बारे में जानकारी माँगी। सीबा ने
बताया कि वह लो देबार नगर में अम्मीएल
के बेटी माकीर के घर मे रह रहा है।" 5 तब
राजा दाऊद ने लोगों को भेजकर बुलवा
लिया। 6 आते ही मपीबोशेत, मुँह के बल
दाऊद के सामने गिर पड़ा। दाऊद के सामने
गिर पड़ा। 7 दाऊद बोला,"मपीबोशेत तुम्हें
डरने की ज़रूरत नहीं है। योनातन की वजह
से मैं तुम्हें प्रेम दिखाऊँगा और शाऊल की
सारी ज़मीन तुम्हें वापस कर दूँगा। इतना
ही नहीं, तुम मेरे साथ बैठ कर हर दिन
खाना खाओगे।" 8 वह बोल उठा, "मैं क्या
हूँ, कि आप मुझ ऐसे मरे कुत्ते पर आप
अपनी नज़र डालें।" 9 तब राजा ने शाऊल
के कर्मचारी सीबा को बुलवाया और कहा,
"जो कुछ शाऊल और उसके घराने का था,
वह सब मैं शाऊल के पोते को दे रहा हूँ।
10 आज के बाद तुम अपने बेटों और नौकरों
के साथ उसकी ज़मीन पर खेती करना।
उसकी उपज ले आना। ताकि शाऊल के
पोते को खाना मिलता जाए। वह मपीबोशेत
मेरे साथ ही मेज पर खाना खाएगा।" सीबा
के पन्द्रह बेटे और बीस सेवा करने वाले
थे। 11 सीबा ने उत्तर दिया,"ठीक है, महाशय
ऐसा ही करूँगा।" दाऊद बोला,"राजकुमारों
की तरह मपीबोशेत मेरे साथ ही खाना खाया
करेगा।" 12 मपीबोशेत के भी एक छोटा बेटा
था, जिसका नामा थाः मीका। सीबा के घर
में सभी रहने वाले मपीबोशेत की सेवा करने
लगे। 13 वह यरूशलेम ही में रहा करता था।
वह अपाहिज था। राजा के साथ ही खाना
खाया करता था।

10 इसके बाद, अम्मोनियों के राजा के
देहान्त के बाद, उसका बेटा हानून
तख्त पर बैठा। 2 दाऊद सोचने लगा,"जिस
तरह से हानून के पिता नाहाश ने मुझे प्रेम
दिखाया था, वैसा मैं भी हानून के प्रति
भला रहूँगा" तब दाऊद ने अपने सेवकों
को उसके पिता की मौत के कारण शान्ति
देने के लिए भेजा। 3 दाऊद के हाकिमों ने
हानून से कहा, "तुम क्या सोचते हो, क्या
ये लोग सचमुच में तुम्हें शान्ति देने के लिए
भेजे गए हैं? क्या वे जासूसी के लिए तो
यहाँ नहीं आए हैं? 4 इसलिए उन लोगों ने
दाऊद के कर्मचारियों को पकड़ कर उनकी
आधी दाढ़ी मुड़वा दी और कपड़े आधे तन
तक के फाड़ दिए और जाने दिया। 5 जैसे ही
यह खबर दाऊद को मिली, उसने लोगों को
भेजा, क्योंकि उन्हें बहुत शर्म आ रही थी।
और राजा ने यह कहा,कि जब तक उनकी
दाढ़ी बढ़ न जाएँ, तब तक यरीहो में ही ठहरे
रहें। 6 जब अम्मोनियों ने देखा कि हम से
दाऊद नाखुश है, तब अम्मोनियों ने बेत्रहोब
और सोबा के बीस हज़ार अरामी सिपाहियों
को,और हज़ार आदमियों सहित माका के
राजा को और बारह हज़ार तोबी पुरुषों
को तनख्वाह पर बुलवाया। 7 यह सुनते ही
दाऊद ने योआबऔर शूरवीरों की पूरी फौज
को भेजा। 8 तब अम्मोनी निकले और फाटक
के पास पंक्ति बनाई; और सोबा और रहोब
के अरामी और तोब और माका के आदमी
उन से न्यारे मैदान में थे। 9 यह देखकर
कि आगे पीछे दोनों ओर हमारे खिलाफ़
पांति बान्धी है, योआब ने सब बढ़े-बढ़े
इस्राएली बहादुरों में से बहुतों को छाँटकर
अरामियों के सामने उनकी पांति बन्धाई,
10 और और लोगों को अपने भाई अबीशै
के हाथ सौंप दिया,और उसने अम्मोनियों के
सामने उनकी पांति बन्धाई। 11 फिर उसने
कहा,यदि अरामी मुझ पर हावी होने लगें,
तो तुम मेरी मदद करना; और यदि अम्मोनी

तुम पर जीतने लगें, तो मैंआकर तुम्हारी
सहायता करूँगा। 12 तुम हिम्मत रखो,और
हम अपने लोगों और अपने परमेश्वर के
नगरों के लिए काम करें और प्रभु को अच्छा
लगे, वह करें। 13 तब योआब और जो लोग
उसके साथ थे, अरामियों से लड़ने पास में
आए और वे उसके सामने से भागे। 14 यह
देखकर कि अरामी भाग खड़े हुए है, अम्मोनी
भी अबीशै के सामने से भागकर नगर के
अन्दर घुसे। तब योआब अम्मोनियों के पास
से लौटकर यरुशलेम को आया। 15 फिर
यह देखकर कि हम इस्राएलियों से हार
गए, अरामी इकट्ठे हुए। 16 और हददेज़ेर ने
दूत भेजकर महानद के पार के अरामियों
को बुलाया; और वे हददेज़र के सेनापति
शोवक को अपना मुखिया बनाकर हेलाम
को आए। 17 इसकी खबर पाते ही दाऊद
ने सभी इस्राएलियों को इकट्ठा किया और
यरदन के पार होकर हेलाम में पहुँचा। तब
आराम दाऊद के विरुद्ध पांति बान्धकर उस
से लड़ा। 18 परन्तु अरामी इस्राएलियों से
भाग खड़े हुए, और दाऊद ने अरामियों में से
सात सौ रथियों और चालीस हज़ार सवारों
की जान ले ली। उनके सेनापति को ऐसा
ज़ख्मी किया, कि वह मर ही गया। 19 यह
देखकर कि हम इस्राएल से हार चुके हैं,
जितने राजा हददेज़ेर के अधीन थे, उन सभी
ने इस्राएल के साथ दोस्ती की, और उसके
अधीन हो गए ।और अरामी अम्मोनियों की
और मदद करने से डरे।

11 जिस समय राजा लोग युद्ध करने
के लिए निकला करते थे, उस वक्त
अर्थात साल के शुरु में दाऊद ने योआब को
और उसके साथ सेवकों और पूरे इस्राएल
को भेज दिया। उन्होंने अम्मोनियो को मारा
और रब्बा नगर की नाकेबन्दी कर दी।
2 शाम के समय दाऊद अपने घर की छत पर
टहल रहा था। वही से उसने एक खूबसूरत
महिला को नहाते देखा। 3 उसने लोगों को
भेजकर उसके बारे में जानकारी हासिल की
कि वह हित्ती उरिय्याह की पत्नी बतशेबा
थी। 4 उसे दाऊद ने अपने यहाँ बुलवा कर
उससे बलात्कार किया। इसके बाद वह
अपने घर चली गई। 5 गर्भवती होने पर
उसने दाऊद को यह खबर पहुँचायी। 6 तब
दाऊद ने योआब के द्वारा हित्ती उरिय्याह
को बुलवाया। 7 उसके आने पर योआब से
फौज का हाल और युद्ध के बारे में पूछा।
8 तब दाऊद ने ऊरिय्याह से कहा,“अपने घर
जाओ और पैर धो डालो।” उरिय्याह के
निकलने के साथ ही पीछे-पीछे उसे कुछ
ईनाम भेजा गया। 9 लेकिन ऊरिय्याह अपने
मालिक के सभी सेवकों के साथ राजमहल
के दरवाजे पर लेट गया। 10 दाऊद को यह
समाचार मिलने पर उसने ऊरिय्याह से उसके
वापस न लौटने का कारण पूछा। 11 उरिय्याह
बोला,“जब प्रभु का बक्सा, इस्राएल और
यहूदी झोपड़ियों में हैं, और योआब तथा
उनके फौजी खुले मैदान में डेरे डाले हुए
हैं, तो मैं क्या घर में खा-पीकर पत्नी के
साथ लेटूँ? नहीं मैं कभी ऐसा नहीं करूँगा।”
12 दाऊद ऊरिय्याह से बोला, तुम आज यहीं
ठहर जाओ, कल चले जाना।” ऊरिय्याह ने
उसकी यह बात मान ली। 13 तब दाऊद ने
उसे निमंत्रण दिया और उसने उसके सामने
खाया-पिया। उसी ने उसको नशे में कर दिया।
शाम को वह अपने सेवकों के साथ सोने
चल दिया। उस दिन वह अपने घर नहीं
गया। 14 सुबह दाऊद ने योआब के नाम की
एक चिट्ठी ऊरिय्याह के हाथ भेज दी। 15 उस
चिट्ठी में लिखा गया कि, “घमासान युद्ध के

इलाके में इसे रखना ताकि वह युद्ध में मारा
जाए।" 16 योआब ने वैसा ही किया। 17 तब
नगर के पुरुष योआब से लड़ाई करने निकल
आए और दाऊद के तमाम लोग हताहत
हुए, जिसमें ऊरिय्याह भी था। 18 तब योआब
ने युद्ध के बारे में पूरी रिपोर्ट दाऊद को
दी। 19 उसने दूत को आज्ञा दी, "जब तुम
युद्ध का पूरा हाल दाऊद को बता चुको,
20 तब झल्लाकर यदि राजा कह उठे,"तुम
लोग वहाँ गए क्यो ? 21 यरूब्बेशेत के बेटे
अबीमेलेक की जान किसने ली? क्या एक
महिला ने शहरपनाह के ऊपर से चक्की का
पाट फेंका नहीं था, जिससे वह तेबेस में दब
कर मर गया था? फिर तुम लोग शहरपनाह
के इतने नज़दीक क्यों गए" तब तुम बताना
कि ऊरिय्याह भी नही रहा।" 22 तब वे दूत
चल पड़े और जाकर दाऊद से योआब की
कही बातें बतला दी। 23 दूत ने दाऊद से
कहा, "हम से ज़्यादा ज़ोर दिखाते हुए,वे
मैदान में उतर पड़े, तब हमने उन्हें फाटक
तक खदेड़ डाला। 24 तब धनुष चलाने वालों
ने शहरपनाह पर से आपके लोगों पर तीर
छोड़ने शुरु किए। इस कारण तमाम लोग मारे
गए, जिनमें ऊरिय्याह भी था।" 25 दाऊद ने
उस दूत से कहा,"योआब से कहना, कि वह
निराश न हो। जिस तरह से तलवार इसे खतम
करती है, उसी तरह उसको भी नाश करती
है। हिम्मत से काम लो और लड़कर नगर को
उलट डालो। 26 ऊरिय्याह की बीबी को जब
उसके पति की मौत की खबर लगी, तो वह
रोने पीटने लगी। 27 उसके विलाप के दिन
समाप्त होने के बाद दाऊद ने उसे अपने यहाँ
एक पत्नी की तरह रख लिया। उसने एक
बेटे को जन्म दिया लेकिन इस घटना से प्रभु
गुस्सा थे।

12 तब नातान नबी को प्रभु ने दाऊद
के पास भेजा। उसने दाऊद से
कहा,"एक नगर में दो आदमी रहा करते
थे।एक अमीर था और दूसरा गरीब। 2 अमीर
आदमी के पास ढेर सारे भेड़-बकरियाँ और
गाय बैल भी थे, 3 लेकिन गरीब के पास
केवल भेड़ को एक छोटी बच्ची थी। उसने
अपने बच्चों के साथ ही उसे पाला था। वह
उसके बर्तनों में से खाती थी और कटोरों
में पानी पिया करती थी। उसकी बेटी की
तरह वह उसके साथ सोती थी। 4 फिर अमीर
आदमी के पास एक मुसाफ़िर आया। उसको
खिलाने के लिए उसने अपने मवेशियों में से
किसी का मांस खिलाने के बजाए, गरीब
आदमी की भेड़ के बच्चे को काटा। 5 यह
सुनते ही दाऊद का गुस्सा भड़क उठा और
नातान से बोला, "जिस किसी आदमी ने
यह काम किया है, उसे फांसी की सजा
मिलनी चाहिए। 6 उस आदमी को भेड़ की
बच्ची के लिए चौगुना भर देना होगा, क्योंकि
इस आदमी के अन्दर तरस नहीं था।" 7 तब
नातान दाऊद से बोला,"तुम ही वह इन्सान
हो" इस्राएल के प्रभु का कहना है, "मैंने तुम्हें
शाऊल के फँदे से छुड़ाया और इस्राएल का
राजा बनाया। 8 मैंने तुम्हारे स्वामी का भवन
और उसकी पत्नियाँ तुम्हें दीं। इस्राएल और
यहूदा का घराना भी मैंने दिया। यदि यह
सब कम था, तो और बहुत कुछ देने वाला
था। 9 प्रभु के आदेश को ठुकरा कर तुमने
ऐसा काम क्यों किया, जो मेरी निगाह में
जायज़ नहीं था? तुमने हित्ती ऊरिय्याह की
पत्नी को अपना कर लिया और ऊरिय्याह
को मरवा डाला। 10 इसलिए तुम्हारे परिवार
में से हिंसा कभी भी न जाएगी; क्योंकि
तुमने मेरी अनसुनी करके दूसरे की पत्नी को

अपना कर लिया है। 11 याहवे का कहना
यह है, “मैं तुम्हारे घर में से मुसीबत उठाकर
तुम पर डालूँगा। तुम्हारे देखते-देखते तुम्हारी
पत्नियों को दूसरों को दे दूँगा। दिन दुपहरी
में वह तुम्हारी पत्नियों के साथ बलात्कार
करेगा। 12 तुमने तो गलत काम छिपा कर
किया था, लेकिन मैं तुम्हारे साथ खुले आम
करूँगा।” 13 तब दाऊद नातान से बोला,
“मेरा अपराध प्रभु के खिलाफ़ है।” नातान
बोला,“प्रभु ने तुम्हारे अपराध को तुम से दूर
किया है, इसलिए तुम मरोगे नहीं। 14 लेकिन
क्योंकि तुमने प्रभु के दुश्मनों को तुच्छ जानने
का मौका दिया है, इसलिए जो तुम्हारे बेटा
होगा, वह मर जाएगा। 15 यह कह कर नातान
अपने घर चला गया जो बच्चा दाऊद और
बतशीबा (ऊरिय्याह की पत्नी) से हुआ, वह
बीमार हो गया। 16 दाऊद बिना खाए पिए
प्रभु के सामने उसके लिए जीवन मांगता
रात भर ज़मीन पर पड़ा रहा। 17 तब वहाँ
के बुज़ुर्ग आकर उसे मनाने लगे, लेकिन
उसने न सुनी, न खाना खाया। 18 सातवें
दिन वह बच्चा मर गया। दाऊद के सेवक
उसे यह खबर देने में हिचकिचाते और
डरते रहे कि दाऊद को बहुत दुख न हो।
19 अपने कर्मचारियों को आपस में पुसफुसाते
देख, वह समझ गया कि बच्चा न रहा।
20 बताए जाने पर वह उठा, नहाया, तेल
लगाया, कपड़े बदले और प्रभु के भवन में
आराधना की। वापस आकर उसने खाना
खाया। 21 उसके कर्मचारियों ने पूछा,“जब
तक बच्चा मरा नहीं था, आप शोक कर
रहे थे। अब उसके मरने के बाद आप उठ
कर सब कुछ करने लगे हैं। 22 दाऊद का
जवाब था,“जब तक बच्चा ज़िन्दा था, मेरी
उम्मीद थी कि वह जी उठेगा। 23 लेकिन
अब जब वह नहीं है और वापस जी नहीं
उठेगा, तो मेरे उपवास रहने का कोई मतलब
नहीं हैं। मैं उसके पास जाऊँगा। वह मेरे
पास न आ सकेगा। 24 अगली बार जो बच्चा,
दाऊद और बतशेबा के साथ आने से हुआ,
उसका नाम सुलैमान रखा गया। वह प्रभु को
प्यारा था। 25 नातान नबी के द्वारा उसने खबर
भेजी और उसने उसका नाम यदीद्याह रखा।
26 इस बीच योआब ने अम्मोनियों के रब्बा,
नगर से लड़ाई करके राज नगर पर कब्ज़ा
कर लिया। 27 तब योआब ने दाऊद को
समाचार भिजवाया,“रब्बा से लड़ कर मैंने
जल वाले नगर को ले लिया है। 28 इसलिए
अब बचे लोगों को एक साथ लाओ और
नगर के चारों ओर घेरा बन्दी करके ले लो।
29 दाऊद ने वैसा किया भी और नगर को
जीत लिया। 30 उनके राजा का ताज तौल
में किक्कार भर सोने का था, जिसमें मणि भी
जड़े हुये थे। उसे राजा के सिर से उतार कर
दाऊद के सिर पर रखा गया। उस नगर से
बहुत समान भी लूट में मिला। 31 वहाँ के
निवासियों को उसने काट डाला और लोहे
के हेंगे उन पर फिरवाए। उसने उन्हें लोहे की
कुल्हाड़ियों से कटवाया और ईट के पजावे
में से चलवाया। अम्मोनियों के सभी नगरों से
भी उसने ऐसा किया ।इसके बाद सभी के
साथ वह यरूशलेम लौट गया।

13 दाऊद के बेटे अबशालोम की एक
खूबसूरत बहन थी। इसका नाम था
तामार। दाऊद का बेटा उसको बहुत पसन्द
करने लगा। 2 वह उससे इतना लगाव रखने
लगा, कि बीमार तक हो गया। उसकी बहन
कुंवारी थी और अम्मोन के लिए मुश्किल
था कि उस से कुछ भी कर सके। 3 अम्मोन
के योनादाब नाम का एक दोस्त था। वह
दाऊद के भाई शिमा का बेटा था। योनातान

बहुत दुष्ट आदमी था। 4 उसने अम्मोन से ही
से पूछा,“तुम आजकल कमज़ोर होते जा रहे
हो, मुझे बताओ ऐसा क्यों हैं? तब अम्मोन
बोला,“अपने भाई अबशालोम की बहन
तामार को मैं, दिल से चाहता हूँ। 5 योनादाब
ने कहा,“तुम बिस्तर पर लेट जाओ और
बीमार होने का बहाना करो। जब तुम्हारा
पिता तुम्हें देखने आए तो कहना, मेरी बहन
तामार मुझे खाना खिलाए। वही मेरे लिए
खाना बनाए और दे भी। 6 अम्मोन ने वैसा
किया, जैसी सलाह योनादाब ने दी थी। जब
राजा उसे देखने आया, वह बोला,“मेहरबानी
से मेरे पास तामार को भेजिए। वह मेरे सामने
पूड़ियाँ बना कर मुझे खिलाए।” 7 दाऊद ने
यह खबर घर पहुँचा दी। 8 तामार अम्मोन
के यहाँ आई जहाँ अम्मोन लेटा हुआ था।
उसने वहाँ आटा गूँधकर पूड़ियाँ बनाई।
9 फिर थाली में रखकर उसे परोस दिया।
लेकिन अम्मोन ने खाने से इन्कार कर दिया।
फिर अम्मोन बोला,“यहाँ से सभी लोग बाहर
चले जाएँ।” इसलिए सभी वहाँ कमरे से
बाहर चले गए। 10 तब अम्मोन तामार से
बोला,“यहीं सोने के कमरे में मेरा खाना ले
आओ।” इसलिए तामार बनाए हुए खाने को
लेकर कहाँ गई। 11 जैसे ही वह अन्दर आई,
अम्मोन ने उसे पकड़कर कहा, मेरे साथ
लेटो।” 12 तामार ने कहा,“नहीं मेरे भाई, ऐसा
मत करो, क्योंकि इस्राएल में ऐसा काम नहीं
किया जाता है। यह तो शर्म की बात है। 13 मैं
ऐसे दास से कैसे छूट पाऊँगी और तुम पूरे
इस्राएल में बेवकूफ समझ जाओगे। इसलिए
इस विषय पर तुम राजा से बात करना,
क्योंकि वह मुझे तुम्हारे हाथ में सौंपने के
लिए मना नहीं करेगा।” 14 लेकिन अम्मोन
ने उसकी बात न मानी और ताकतवर होने
के कारण बलात्कार किया। 15 उसके बाद
अम्मोन तामार से नफ़रत करने लगा। उसकी
नफ़रत पहले के प्रेम से कहीं ज़्यादा था। वह
बोला, “तुम यहाँ से चली जाओ।” 16 वह
बोली, “नहीं, मैं नहीं जाऊँगी, क्योंकि मुझे
भगा देने का गुनाह बलात्कार से बढ़कर
होगा” लेकिन उसने उसकी न सुनी। 17 तब
उसके अपने सेवक को बुलाया और हुकुम
दिया, “इस महिला को बाहर निकालकर
दरवाज़ा बन्द कर दो।” 18 तामार रंग-बिरंगा
कुर्ता पहने हुए थी।कुँवारियों की पोशाक
उस समय ऐसी हुआ करती थी। सेवक ने
उस समय उसे कमरे के बाहर कर दिया।
उसने दरवाजे की चिटकनी भी भीतर से
लगा ली। 19 इसके बाद तामार ने अपने सिर
पर राख डाली। अपने रंग-बिरंगे कुर्ते को
उसने फाड़ डाला। अपने सिर पर हाथ रख
वह रोती - बिलखती चली गई। 20 उसका
भाई अबशालोम बोला,“क्या तुम्हारा भाई
अम्मोन तुम्हारे साथ सोया था? वह तुम्हारा
भाई है, तुम खामोश ही रहना और दुखी मत
होना। 21 ये समाचार दाऊद को मिलने पर
वह भड़क गया। 22 उस समय अबशालोम
खामोश रहा, लेकिन अम्मोन के लिए नफ़रत
हो गयी। 23 दो साल बाद अबशालोम ने
एप्रैम के आस-पास बालहासारे में भेड़ों का
ऊन कतरवाया । उस समय उसने सभी
राजकुमारों को बुलाया । 24 वह दाऊद
से बोला,“पिता जी भेड़ों का ऊन कतरा
जा रहा है। आप भी अपने कर्मचारियों
(सेवकों) के साथ मेरे साथ आईए। 25 राजा ने
अबशालोम से कहा,“नहीं, मेरे बेटे, हम सभी
जाकर तुम पर बोझ नहीं बनना माँगते है।”
अबशालोम गिड़गिड़ाया, लेकिन राजा ने एक
नहीं मानी, लेकिन उसे आशीर्वाद दिया।
26 तब अबशालोम बोला,“यदि नहीं तो कम
से कम अम्मोन को ही भेज दीजिए।” राजा

बोला,“वह क्यों?” 27 बहुत ज़ोर डाले जाने
पर राजा ने अम्मोन ओर दूसरे राजकुमारी
को जाने की इज़ाज़त दे ही दी। 28 तब
अबशालोम ने अपने सेवकों को आदेश
दिया,“जब अम्मोन शराब के नशे में धुत
होगा, तभी उस पर हमला बोल देना।
इसलिए डरना नहीं, हिम्मत रखो यह मेरी
आज्ञा है। 29 आदेश के मुताबिक ही सेवकों
ने किया। तभी दूसरे राजकुमार भाग उठे।
30 वे रास्ते ही मे थे, कि दाऊद को खबर
मिल गई, सभी राजकुमारों को अबशालोम
ने मार डाला है।” 31 यह सुनकर दाऊद और
उसके सेवकों ने अपने-अपने कपड़े फाड़े।
और उसके सभी कर्मचारी वस्त्र फाड़े हुए
वहीं खड़े रहे। 32 तब दाऊद के भाई शिमा के
बेटे योनादाब ने कहा,“आप इस गलतफहमी
में न रहिये, कि सभी राजकुमार मार डाले
गए हैं, केवल अम्मोन ही मारा गया है। इस
बात का फैसला उस ही दिन हो गया था,
जब अम्मोन ने तामार का बलात्कार किया
था। 33 इसलिए आप परेशान न हो, केवल
अम्मोन ही मरा है। 34 अबशालोम वहाँ से
चम्पत हो चुका था। जवान पहरेदार ने देखा
कि पहाड़ के किनारे रास्ते पर बहुत से लोग
चले आ रहे हैं। 35 योनादाब ने राज्य से कहा,
“राजकुमार आ पहुँचे हैं। जैसा मैने कहा था,
वैसा ही हुआ।” 36 राजकुमार दाखिल होते
ही ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। साथ ही राजा और
उसके सेवकों ने भी रोना शुरु कर दिया।
37 इसी दौरान अबशालोम गेशूर के राजा
अम्मीहूद के बेटे तहमै के पास चला गया।
उधर दाऊद अपने बेटे के लिए दुखी होता
रहा। 38 अबशालोम तीन साल तक गशूर ही
में रहा। 39 राजा दाऊद चाह रहा था कि
अबशालोम से मिले, क्योंकि अम्नोन की
मौत के बारे में वह शान्त हो चुका था।

14 जब सरूयाह के बेटे योआब ने
समझ लिया कि राजा अबशालोम
के लिए फिकरमन्द है, 2 तब योआब ने
तकोआ नगर से एक चालाक महिला को
बुलवाया। उसने उससे कहा, “शोक करने
वाली महिला का ढोंग रचो और शोक के
कपड़े भी पहन लो। अपने ऊपर तेल मत
लगाना। ऐसी महिला का रूप बनाना जैसे
कि मरे हुए के लिए शोक मना रही हो। 3 तब
राजा के पास जाकर तुम्हें कुछ कहना है जो
मैं बताता हूँ। 4 उस महिला ने वैसा ही किया
और राजा के सामने गिर कर बोली, “मदद
कीजिए राजा।” 5 राजा ने पूछा,“क्या हुआ
तुम्हें ? वह महिला। बोली,“मैं विधवा हूँ।
6 मेरे दो बेटे थे। एक दिन वे झगड़ पड़े। वहाँ
बीच बचाव करने वाला कोई नहीं था और
एक ने दूसरे को मार डाला। 7 अब मेरा पूरा
परिवार मेरे पीछे पड़ गया है। वे कहते हैं
कि जिसने अपने भाई को मार डाला, उसे
हमारे हाथ सौंप दो, कि हम उसे मौत की
सज़ा दें और इस तरह कोई वारिसदार न
बचे। इस तरह वे मेरे बचे हुए अंगारे को भी
बुझा देंगे। इस तरह से मरे पति का नाम इस
दुनिया से मिट जाएगा। 8 राजा ने महिला से
कहा, “तुम घर जाओ, मैं कुछ करता हूँ।”
9 तब वह महिला बोली, “मेरा राजा और मेरे
मालिक, इस बुराई की सज़ा मुझ पर और
मेरे पिता के परिवार पर हो, तथा राजा और
उसके राजासन पर कोई आरोप न लगे।”
10 इसलिए राजा बोला,“यदि कोई तुम्हें कुछ
कहे, उसे मेरे पास ले आना, वह तुम्हारा
बाला बाँका भी न कर सकेगा।” 11 तब
महिला बोली,“राजा प्रभु की कसम खाकर
बोले, जिस से कि खून का बदला लेने वाला
और नाश न करने पाए अर्थात मेरे बेटे को न
मारा जाए। तब राजा बोला,“प्रभु की शपथ,

तुम्हारे बेटे को काई भी नुकसान न पहुँचा
सकेगा। 12 तब महिला बोली,“क्या मैं एक
बात कह सकती हूँ।” 13 राजा ने उसे इज़ाजत
दी। महिला बोली, “प्रजा के नुक्सान के लिए
आपने ऐसी योजना क्या बनाई है? इस बात
की वजह से राजा दोषी है। वह अपनी कही
बात से पीछे नहीं मुड़ सकता। 14 हम तो
एक दिन मर जाएँगे और पृथ्वी पर गिरने
वाले पानी की तरह हैं, जिसे फिर इकट्ठा नहीं
किया जा सकता। फिर भी प्रभु जान लेते नहीं
है। वह ऐसा तरीका निकालते हैं, जिस से
15 इसलिए कि लोगों ने मुझे डरा दिया है,
राजा जी मैं आपके पास आई हूँ। यह सोचते
हुए कि शायद राजा मेरी सुन ले। 16 राजा उस
इन्सान के हाथ से मुझे और मेरे बेटे को बचा
सकता है जो हम दोनों की प्रभु की मीरास से
अलग रखना चाहता हों। 17 तब मैंने सोचा,
आपकी बातों से मुझे सुकून मिलेगा। आप
तो प्रभु के दूत की तरह भले-बुरे में भेद करने
वाले हैं। 18 तब राजा उस महिला से बोला,
“मैं जो सवाल तुम से करूँ, मुझे सही जवाब
देना। महिला ने कहा,“ठीक है।” 19 राजा
ने प्रश्न किया,“क्या योआब का हाथ इस
में हैं?” महिला बोली,“मैं सच सच कहती
हूँ कि योआब ने ही मुझे आदेश दिया और
यह सब कुछ सिखाया है। 20 योआब ने ऐसा
इसलिए किया कि बात का रंग बदल दे।
लेकिन जैसी बुद्धि प्रभु के दूत की होती है
आपकी भी वैसी ही है, ताकि दुनिया की
पूरी जानकारी रखे।” 21 तब राजा ने योआब
से कहा,“देखो, तुम्हारी बात मैंने मान ली
है। इसलिए जाओ और अबशालोम को ले
आओ।” 22 इसलिए योआब ने ज़मीन पर गिर
कर उन्हें प्रणाम किया। योआब ने कहा,“मेरे
स्वामी राजा, “मालिक आज मैं समझ गया
हूँ कि आपकी दया दृष्टि मुझ पर है, क्योंकि
आपने मेरी बात मान ली है।” 23 तब योआब
ने राजा के आदेश के अनुसार किया। 24 राजा
बोला,“वह सीधा अपने घर जाए और मुझ से
न मिले।” इसलिए अबशालोम बिना पिता से
मिले घर चला गया। 25 अबशालोम की तरह
पूरे इस्राएल में कोई इतना खूबसूरत न था।
सिर से पैर तक वह बिना किसी कमी का
था। 26 हर साल के आखिर में वह अपना
सिर के बाल निकलवाता था। तौल में वे दौ
सौ शेकेल होते थे। 27 अबशालोम के तीन
बेटे और एक बेटी थी। उसकी बेटी तामार
बहुत खूबसूरत थी। 28 अबशालोम यरूशलेम
में दो साल तक रहा, लेकिन राजा से न मिल
सका। 29 तब अबशालोम ने योआब को राजा
के पास भेजने के लिए बुलवाया। लेकिन
उसने आना मंज़ूर न किया। 30 इसलिए वह
अपने नौकरों से बोला,“देखो योआब का
खेत मेरे खेत के पास है उसमें जौ की खेती
की गई है। जाओ, उसमें आग लगा दो।”
इसलिए अबशालोम के नौकरो ने उस खेत
को जला डाला। 31 तब योआब ने जाकर
अबशालोम से पूछा,“तुम्हारे नौकरों ने मेरे
खेत में आग क्यों लगाई? 32 अबशालोम ने
कहा,“मैंने तुम्हें बुलवाया था, ताकि राजा
तक यह खबर भिजवा सकूँ कि मैं बेकार
में गेशूर से यहाँ आया हूँ, मेरे लिए वहीं रहना
बेहतर था। इसलिए यह अच्छा होगा कि मैं
राजा से मिल सकूँ। यदि मैं गुनाहगार हूँ तो
मेरी जान ले ली जाए। 33 यह बात योआब ने
जब राजा को बताई, तब राजा ने अबशालोम
को बुलवाया। आते ही उसने मुँह के बल गिर
कर प्रणाम किया। और राजा ने भी उसे चूमा।

15 अबशालोम ने खुद के लिए एक
रथ, घोड़े और तेज रफ्तार से दौड़ने
वाले पचास आदमी रखे। 2 सुबह सुबह

अबशालोम नगर के दरवाजे के रास्ते पर
खड़ा हो जाया करता था। जब कभी काई
व्यक्ति वहाँ राजा के पास इन्साफ़ के लिए
आया करता था, अबशालोम उस से उसके
नगर के बारे में पूछा करता था। 3 बताने पर
अबशालोम उस से कहा करता था,“तुम्हारा
दावा तो तो ठीक है, लेकिन राजा की ओर
से तुम्हारी दलील सुनने वाला कोई नहीं है।”
4 फिर अबशालोम कहता था,काश मुझे कोई
इस देश का जज ठहराता है, तब मैं ठीक
से इन्साफ़ दिलाता। 5 जब कभी कोई उसके
पास आया करता था, वह हाथ बढ़ा उसे
चूमा करता था। 6 इसलिए जितने इस्राएली
वहाँ इन्साफ़ के लिए राजा के पास आया
करते थे, उन सब के साथ उसका यह बर्ताव
था। ऐसा करने से अबशालोम ने लोगो का
मन जीत लिया। 7 चार साल के बाद एक दिन
अबशालोम राजा से बोला,“मुझे इज़ाजत दें
कि मैं हेब्रोन जाकर अपनी मन्नत पूरी करूँ।”
8 मैंने अराम के गेशूर में रहते हुए यह बात
प्रभु से कही थी,“यदि आप मुझे यरूशलेम
पहुँचा दें, तो मैं आपकी इबादत करूँगा।
9 राजा ने उसे जाने की अनुमति दे भी दी।
10 इस्राएल के सभी कबीलों में से अबशालोम
ने जासूस भेजे कि वे जाकर यह कहें,“जैसे ही
तुम नरसिंगे की आवाज़ सुनो, वैसे ही चिल्ला
उठना कि हेब्रोन में अबशालोम राजा बन
चुका है। 11 फिर यरूशलेम से ही अबशालोम
के साथ दौ सौ आदमी गए। वे सच्चे मन से गए
थेऔर किसी को योजना के बारे मे न जानते
थे। 12 जब अबशालोम कुर्बानी चढ़ा रहा था,
तब उसने दाऊद के सलाहकार गीलो के रहने
वाले अहीतोपेल का बुलवाया। अबशालोम
के साथ अधिक लोग जुड़ते गए। 13 एक
आदमी ने आकर दाऊद को खबर दी कि
इस्राएलियों के मन का अबशालोम ने जी
लिया। 14 तब दाऊद ने अपने कर्मचारियों
से जो यरूशलेम में थे, कहा,“चलो यहाँ से
भाग चले, नहीं तो हम आपनी जान गवाँ
देंगे।” 15 कर्मचारी बोले, “आप जैसा कहे,
हम सभी तैयार हैं।” 16 इसलिए राजा के
निकलने के साथ उसका पूरा घराना भी चल
पड़ा। लेकिन राजा ने अपनी दस रखेलियों
को भवन की देखभाल के लिए छोड़ दिया
था। 17 तब राजा निकल चला। उसके पीछे
दूसरे लोग भी हो लिए और वहीं ठहरे।
18 दाऊद के कर्मचारी आगे बढ़ गए। वे सभी
करेती, पलेती और गती अर्थात वे छै:सौ
आदमी जो उसके साथ गत से आए थे।
राजा के सामने आगे बढ़ गए। 19 तब राजा
ने गतवासी इत्तै से कहा,“तुम हमारे साथ
नहीं जाओगे। राजा के साथ ही रहो। तुम
तो परदेशी और निकाले हुए हो, अपने यहाँ
चले जाओ। 20 तुम कल ही तो आए हो
और क्या मैं आज ही तुम्हें भटका दूँ, जब
कि मैं जहाँ जा पाऊँगा, वहीं घूमता रहूँगा।”
21 लेकिन इत्तै का जवाब राजा को यह था,
”प्रभु, आपकी और आपके जीवन की शपथ
जहाँ कहीं आप जाएँगे, वही मैं आऊँगा।”
22 इसलिए दाऊद इत्तै से बोला, “आओ उस
पार चलें, तब इत्तै अपने सभी आदमियों,
महिलाओं और बच्चो के साथ पार उतर गया।
23 उस समय सारे देश के लोग ज़ोर -ज़ोर
से रो रहे थे, ये सभी पार उतर गए। राजा
भी किद्रोन ले के पार उतर गया। सभी लोग
भी पार उतरकर जंगल के रास्ते पर आगे
बढ़े। 24 तभी सादोक भी आ पहुँचा। उसके
साथ प्रभु की वाचा का बक्सा उठाए लेवी
भी थे। उन्होंने बक्से को नीचे उतार दिया।
तब एब्यातार ऊपर आया और जब तक सभी
लोग नगर से निकल न गए, वह वहीं खड़ा
रहा। 25 राजा ने सादोक से कहा, “प्रभु का

बक्सा नगर में वापस ले जाओ। यदि प्रभु
की कृपा हुई तो वह मुझे लौटा लाएँगे। वह
मुझे यह तथा अपना निवास स्थान दिखाएँगे।
26 लेकिन यदि वह कहे,“मैं तुम से खुश नहीं
हूँ, तो मैं हाजिर हूँ। वह जो चाहे, सो करे।
27 सादोक पुरोहित से राजा ने कहा,“क्या तुम
नबी नहीं हो? तुम अपने बेटों, और अहीमास
तथा एब्यातार के बेटे योनातान के साथ
वापस नगर चले जाओ। 28 मैं जंगल के घाटों
तक तब तक इन्तज़ार करूँगा, जब तक
तुम से खबर न मिले।” 29 इसलिए सादोक
बौर एब्यातार प्रभु की वाचा के बक्से को
यरूशलेम ले आए, और वहीं रहे। 30 तब
दाऊद जैतून पहाड़ की चढ़ाई पर सिर ढाँके,
रोता हुआ चढ़ने लगा। उसके साथ जो लोग
थे वे भी वैसा कर रहे थे। 31 तभी किसी
ने दाऊद को बताया, “अबशालोम के साथ
योजना बनाने वालों मैं अहीतोपेल भी है।”
तब दाऊद बोला,“हे प्रभु, अहीतोपेल भी
है।” तब दाऊद बोला,“हे प्रभु, अहीतोपेल
की सलाह को बेवकूफी में बदल डालिए।
32 आराधना की जगह जहाँ, दाऊद पहुँचने
वाला था, तभी उसकी मुलाकात ऐरकी हूशै
से हुई। उसके कपड़े फटे हुए थे और सिर पर
मिट्टी पड़ी हुई थी। 33 दाऊद उस से बोला,
“यदि तुम मेरे साथ आगे आजो, तो मेरे
लिए एक बोझा होगे। 34 लेकिन यदि वापस
लौट जाओ और अबशालोम से कहा,“हे
राजा, मैं तेरा नौकर रहूँगा। जैसा पुराने समय
में मैं तुम्हारे पिता का नौकर था, वैसे ही
अब भी रहूँगा। तब तुम मेरे लिए अहीतोपेल
की सलाह को बेकार कर सकोगे। 35 क्या
सादोक ओर एब्यातार पुरोहित वहाँ तुम्हारे
साथ न रहेंगे ? ऐसा हो कि जो कुछ तुम राजा
के घर से सुनो, उसे सादोक और एब्यातार
को बता दिया करना।वे मुझे बताते रहेंगे।
36 सादोक का बेटा अहीमास और एब्यातार
का बेटा योनातान उनके साथ वहाँ हो तुम्हें
जो कुछ मालूम पड़े, उनके द्वारा मुझ तक
पहुँचा देना।” 37 इस तरह दाऊद का दोस्त
हूशै नगर में गया। इसी बीच अबशालोम भी
यरूशलेम में पहुँच गया।

16 अभी दाऊद चोटी से कुछ ही दूर
पर गया था कि उसे मपीबोशेत का
सेवक सीबा मिला। उसके पास दो गधे
थे उस पर दौ सौ रोटियाँ, किशमिश के
एक सौ गुच्छे, एक सौ गरमी के फल और
एक मश्क मदिरा लदी थी। 2 राजा सीबा से
बोला,“यह सब तुम क्यों लाए हो?” सीबा
ने कहा,“गधे, राजा के परिवार की सवारी
के लिए हैं। रोटियाँ तथा फल जवानों के
खाने के लिए और मदिरा उनके लिए, जो
जंगल में थक जाएँगे। 3 राजा बोला,“तुम्हारे
मालिक का बेटा कहाँ है?” सीबा ने कहा
कि यरूशलेम ही में है। उसका कहना है
कि आज इस्राएल का घराना मेरे पिता का
राज्य मुझे वापस करेगा। 4 राजा ने सीबा से
कहा, देखो, मपीबोशेत की सारी दौलत अब
तुम्हारी हो गई है।सीबा बोला, “मैं आपको
दण्डवत् करता हूँ, क्योंकि आपकी कृपा मुझ
पर बनी हुई है।” 5 जब राजा दाऊद बहुरीम
पहुँचा, तो वहाँ पर शाऊल के परिवार के
एक आए हुए एक व्यक्ति को देखा। वह गेरा
का बेटा था और उसका नाम था, शिमी।
वह अपने मुँह से शाप दे रहा था। 6 वह
दाऊद और उसके साथियों पर पत्थर फेंक
रहा था। तभी सारे लोग और बहादुर लोग
उसके दाईं बाईंओर खड़े थे। 7 शिमी बुरी
बुरी बातें बोलते हुए कहता गया,“हे खूनी
और ओछे आदमी, हट जा। 8 जिस शाऊल
की जगह पर राज्य किया, उसके पूरे परिवार

के खून का बदला प्रभु ने तुम से ले लिया है
और तुम्हारे बेटे अबशालोम को दे दिया है।
इसलिये कि तुम खूनी हो, तुम अपनी बुराई
में फंस चुके हो।" 9 इसके बाद सरूयाह के
बेटे अबीशै ने राजा से कहा," यह मरा हुआ
कुत्ता मेरे मालिक को शाप दे रहा है , मैं अभी
इसे सबक सिखाता हूँ। " 10 लेकिन राजा
ने कहा ,"यदि प्रभु ने किसी को शाप देने
के लिये प्रेरित किया है , तो उसे कौन रोक
सकेगा? " 11 दाऊद ने अबीशै और दूसरे
कर्मचारियों से कहा," देखो, मेरा बेटा ही मेरे
खून का प्यासा है, तो यदि यह बिन्यामीनी
भी अनाप सनाप बक रहा है, तो क्या हुआ?
12 क्या पता प्रभु मुझ पर नज़र करें और जो
इस आदमी ने चाहा है, वैसा मेरे साथ कभी
न हो।" 13 वहाँ से दाऊद और उसके लोग
आगे बढ़ गए । शिमी भी पहाड़ी के किनारे-
किनारे शाप देता और धूल फेंकता चलता
गया। 14 राजा और उसके साथ के लोग
वहाँ थके माँदे पहुँचे और वहीं आराम भी
किया। 15 अबशालोम अपने लोगों के साथ
यरूशलेम आया। उस समय उसके साथ
अहीतोपेल भी था। 16 जब दाऊद का दोस्त
एरेकी हूशै अबशालोम के पास पहुँचा, तब
हूशै बोला,"राजा की उम्र लम्बी हो।" 17 तब
अबशालोम ने हूशै से कहा,"दोस्त के लिये
क्या तुम्हारी यही बफ़ादारी है? उसके साथ
तुम क्यों नहीं गए?" 18 हूशै ने कहा,"जिसे
सभी चुन चुके हैं, भी उसे चुनूँगा और उसके
साथ रहूँगा। 19 मैं और किसकी सेवा करूँ,
क्या मैं उसके बेटे के सामने रहकर उसकी
सेवा न करूँ? जिस तरह मैंने तुम्हारे पिता
की सेवा की है, उसी तरह मैं तुम्हारे सामने
भी रहूँगा।" 20 तब अबशालोम ने अहीतोपेल
से कहा,"हमें बताओ, कि क्या किया जाए?"
21 अहीतोपेल बोला,"जिन रखैलों को तुम्हारे
पिता ने भवन की देखभाल के लिये छोड़ा
है, उनके पास जाओ। तभी सारे इस्राएल को
मालूम चलेगा, कि तुमने अपने लिये अपने
पिता की नफ़रत को भड़का दिया है। तब
तुम्हारे साथ के सभी लोगों के हाथ मज़बूत हो
जाएँगे।" 22 इसके बाद छत पर अबशालोम
के लिये एक तम्बू लगाया गया। सभी लोगों
की जानकारी में वह अपने पिता की रखैलों
के पास गया 23 उन दिनों अहीतोपेल की
सलाह को प्रभु की ओर से ही समझा जाता
था।

17 अहीतोपेल ने अबशालोम से कहा,"
मैं बारह हज़ार आदमियों को चुनना
चाहूँगा, ताकि दाऊद का पीछा कर पाऊँ।
2 जब वह थक कर चूर हो चुकेगा, तभी
हमला करके उन्हें डरा दूँगा, ताकि वे सभी
भाग जाएँ और दाऊद की हत्या कर सकूँ।
3 सभी लोगों को मैं वापिस तुम्हारे पास
ले आऊँगा। जिस आदमी को तुम चाहते
हो, उसके मिलते ही सारी प्रजा भी मिल
जाएगी, तभी लोग भी सुकून से रह सकेंगे।
4 जितने भी इस्राएल के प्राचीन लोग थे , उन्हें
यह बात पसन्द आई। 5 फिर अबशालोम
ने कहा,"एरेकी हूशै को बुलाओ,कि हम
सुनें कि वह क्या कहना चाहता है।" 6 हूशै
के वहाँ पर आने पर अबशालोम उससे
बोला,"अहीपोतेल ने ऐसा कहा है, क्या हम
उसकी बात मानें? यदि नहीं, तो तुम ही
बताओ।" 7 इसलिये हूशै ने अबशालोम से
कहा,"इस बार की अहीपोतेल की सलाह
ठीक नहीं है।" 8 इसके बाद हूशै ने कहा,"
तुम अपने पिता और उसके बहादुर लोगों
को जानते हो, कि उनकी योग्यता क्या है
और तुम्हारा पिता युद्ध में तेज़ है। वह दूसरे
लोगों के साथ रात नहीं बिताएगा। 9 सुनो,
अभी तक तो वह या तो गुफा में या कहीं और

छुप गया होगा।जब वह पहले हमला करके
उन पर भारी पड़ जाएगा, तो लोग यही कहेंगे
कि अबशालोम के लोगों को बर्बाद किया जा
रहा है। 10 तब बहादुर लोग भी घबरा जाएँगे।
यह तो सभी जानते हैं कि तुम्हारा पिता और
उसके साथी बहादुर हैं। 11 मैं तो यही सलाह
दूँगा कि दान से लेकर बेर्शेबा तक ज़्यादा से
ज़्यादा लोग इकट्ठे किये जाएँ और तुम खुद
भी युद्ध में जाओ 12 इस तरह वह जहाँ भी
हमें मिले हम उसके पास पहुँच ही जाएँगे।
उस समय हम ओस की तरह उन पर टूट
पड़ेंगे। ऐसा करने से उनमें से कोई भी बच
न सकेगा। 13 यदि वह किसी नगर में घुस
जाए पर सारा इस्राएल वहाँ रस्सियाँ लेकर
आ जाएगा। तब हम उस नगर को बर्बाद कर
डालेंगे। 14 तब अबशालोम और इस्राएलियों
ने कहा," एरेकी हूशै की सलाह अहीतोपेल
की सलाह से अधिक अच्छी है।" प्रभु ने
अहीतोपेल की सलाह को बेकार करने की
ठान ली थी, जिस से अबशालोम पर मुसीबत
लाई जा सके। 15 तब हूशै ने सादोक और
एब्यातार पुरोहितों से कहा," अबशालोम
और इस्राएल के बुजुर्गों को अहीतोपेल ने
यह सलाह दी , लेकिन मैंने यह सलाह दी
थी। 16 इसलिये जल्दी से दाऊद को बताया
जाए कि वह जंगल के घाटों मे रातें न बिताए,
ताकि ऐसा न हो कि राजा और उसके साथ
के लोग नाश हो जाएँ।" 17 योनातान और
अहीमास एनरोगेल में ठहरे हुए थे। वहाँ
एक दासी जाकर खबर दे दिया करती थी।
तब वे राजा को समाचार दे दिया करते थे।
18 लेकिन एक लड़के ने देख लिया और
अबशालोम को बता दिया , इसलिय जल्दी
से वे वहाँ से चल दिये और बहीरीम में किसी
के घर आ गए। वहाँ वे कुएँ में छुप गए
। 19 तब उस महिला ने एक कपड़े से कुएँ
का मुँह ढक दिया। उसने उस पर अनाज भी
फैला दिया 20 तब अबशालोम के कर्मचारियों
ने घर में आकर महिला से पूछा," अहीमास
और योनातान कहाँ हैं?" महिला का जवाब
था," वे नाले के पार जा चुके हैं।" उन
लोगों ने खोजबीन की, लेकिन कोई सुराग न
मिला। 21 उनके जाने के बाद वे कुएँ से बाहर
निकल आए। और इन्होंने जाकर दाऊद को
बताया। वे बोले," जल्दी से नाला पार कर
लो, क्योंकि तुम्हारे खिलाफ़ अहीतोपेल ने
ऐसी ऐसी सलाह दी है।" 22 तब दाऊद अपने
साथियों के साथ यरदन पार चला गया।
सुबह तक सभी पार उतर गए। 23 अहीतोपेल
की सलाह न माने जाने की वजह से वहाँ
से अपने घर जाकर सब प्रबन्ध किया और
आत्म हत्या कर ली। उसके पिता की कब्र
ही में उसे गाढ़ दिया गया। 24 इसके बाद
दाऊद महनैम में आ गया। और अबशालोम
और उसके साथ के सभी आदमी यरदन के
पार उतर गए। 25 अबशालोम ने योआब की
जगह अमासा को सेनापति बनाया । इस
अमासा के पिता का नाम यित्रा था। यित्रा ने
नाहाश की बेटी अबीगल अर्थात योआब की
माँ सरूयाह की बहन से विवाह किया था।
26 इसके बाद इस्त्राएलियों और अबशालोम
ने गिलाद में छावनी डाली। 27 दाऊद के
महनैम में आने पर अम्मोनियों के रब्बा से
नहाश क बेटा शोबी और लो -देबार से
अमीएल का बेटा माकीर और रोगलीम से
गिलादी बर्जिल्लै 28 चारपाईयाँ,तसले, मिट्टी के
बर्तन , गेहूँ, जौ, आटा,भुना आनाज,लोबिया,
मसूर, भुने बीज, 29 शहद ,दही भेड़ें और
पनीर उनके खाने के लिये लाए।

18 तब दाऊद ने अपने लोगों को गिना।
उसने सहस्त्रपतियों और शतपतियों
को उनके ऊपर ठहराया। 2 फिर अपने दो

तिहाई लोगों को योआब के अधीन और एक तिहाई को सरूयाह के बेटे अबीशै अर्थात योआब के भाई के आधीन और तीसरी तिहाई को गती इत्तै के आधीन करके युद्ध करने भेजा।राजा ने अपने लोगों से कहा," तुम्हारे साथ ज़रूर चलूँगा।" 3 लेकिन लोग बोले," नहीं आप हमारे साथ मत आईये। हमें भागना पड़े या जान गँवानी पड़े, तो कोई बात नहीं। आप हमारे लिये दस हज़ार के बराबर हो ।इसलिये आप हमारी मदद यहीं रहकर कीजिये।" 4 राजा का जवाब था ," जैसा तुम ठीक समझो, मैं करूँगा।"इसलिये राजा फ़ाटक के पास खड़ा हो गया और लोग सौ-सौ तथा हज़ार-हज़ार के दल में उसके सामने निकल गए। 5 राजा ने योआब,अबीशै और इत्तै को आदेश दिया," मेरी वजह से जवान अबशालोम के साथ अच्छा बर्ताव करना।" इस आदेश को सभी लोगों ने सुना। 6 लोग इस्राएल के खिलाफ़ मैदान में जा पहुँचे और वहीं एप्रैम के जंगल में युद्ध हुआ। 7 इस्राएल के लोग दाऊद के लोगों से हार गए । 8 मारे जाने वाले लोगों से ज़्यादा लोग जंगल के शिकार बन गए । 9 अचानक दाऊद और अबशालोम के लोगों का आमना सामना हो गया। अबशालोम जिस खच्चर पर सवार था, वह बांज पेड़ के नीचे से गुज़रा। तभी उसका सिर उस पेड़ में फँस गया और गधा आगे निकल गया। 10 किसी आदमी ने इस बात की सूचना योआब को दे दी । 11 यह सुनते हुए उसने समाचार देने वाले से कहा,"उसी समय तुमने यदि उसे मार डाला होता , तो मैंने तुम्हें चाँदी के दस टुकड़े और एक कमरबन्द दिया होता।" 12 उस संदेश देने वाले ने कहा,"चाहे मुझे हज़ार टुकड़े भी दिये जाते , फिर भी मैंने उसे न मारा होता, क्योंकि हमें अबशालोम पर हाथ न उठाने का आदेश दिया गया था। 13 यदि चालाकी से मैंने यह किया भी होता, तो तुमने भी मेरा साथ न दिया होता और राजा को भी सब कुछ मालूम हो जाता।" 14 तब योआब बोला, "मैं यहाँ और तुम्हारे साथ ठहर नहीं सकता।" इसलिये उसने भाले से अबशालोम को छेद डाला। 15 इसके बाद योआब के हथियार ढोने वाले जवानों ने अबशालोम को घेरा और मार डाला। 16 बाद में योआब ने नरसिंगा फूँक दिया। तब लोग इस्राएल का पीछा करने से लौट आए ,क्योंकि योआब ने लोगों को रोक लिया। 17 फिर उन्होंने उसकी लाश को एक गड्ढे में डाल दिया और उसके ऊपर पत्थरों को ढेर लगा दिया। इसके बाद इस्राएली अपने अपने घर चले गए। 18 अपने जीवन काल ही में अबशालोम ने राजा की तराई में एक खम्भा खड़ा किया था । उसकी सोच यह थी कि मेरे बेटा न होने की वजह से कुछ तो होना चाहिये, जिससे मेरी मौत के बाद लोग मुझे याद करें। उसके बनाए गए खम्भे को आज तक अबशालोम का खम्भा कहा जाता है। 19 तब सादोक के बेटे अहीमास ने कहा, "मैं जल्दी से जाकर राजा को यह खबर दे देता हूँ कि प्रभु ने उसे उसके दुश्मनों से छुड़ाया है ।" 20 लेकिन योआब ने उससे कहा,"आज रहने दो, किसी और दिन समाचार दे देना,क्योंकि राजा का बेटा मर गया है।" 21 तब योआब ने एक कूशी से कहा,"जो कुछ तुमने अपनी आँखों से देखा है, वह सभी जाकर राजा को बताओ।" उसने ऐसा किया भी। 22 फिर सादोक के बेटे अहीमास ने योआब से कहा,"चाहे कुछ भी क्यों न हो, मैं उसका पीछा करूँगा।" योआब बोला,"जब तुम्हारे समाचार से कुछ फ़ायदा नहीं होने का है, तो दौड़ते हुए क्यों जाना माँग रहे हो? 23 वह

बोला, “चाहे कुछ भी हो मैं तो जाऊँगा।” इसलिये उसने कहा कि यदि वह दौड़ कर जाना ही माँगता है, तो जाए। तब अहीमास इतनी ज़ोर से दौड़ा कि कूशी से आगे निकल गया। 24 उस समय दाऊद दो फाटकों के बीच बैठा हुआ था। वह पहरुआ फाटक की छत पर शहरपनाह के पास चढ़ गया। जब उसने वहाँ से एक आदमी को दौड़ कर आते देखा। 25 इस बात की खबर चौकीदार ने दाऊद को दी।राजा ने कहा,“यदि वह अकेला आ रहा है तो उसके पास अच्छी खबर होगी।” 26 इसके बाद पहरुए को एक और आदमी आता हुआ दिखा और उसने द्वारपाल को बतला दिया । राजा ने भी सोचा कि वह अच्छा समाचार लाया होगा। 27 तब पहरुए ने कहा,“मुझे पहले का दौड़ना सादोक के बेटे अहीमास के दौड़ने की तरह लगता है।” राजा ने कहा,“यह तो एक अच्छा इन्सान है और अच्छा समाचार लाया होगा। 28 ऊँची आवाज़ से अहिमास ने राजा से कहा,“सब कुछ अच्छा है।” वह ज़मीन पर गिर गया और राजा को दण्डवत् किया। फिर उसने कहा,“तुम्हारे प्रभु की बड़ाई हो, जिन्होंने उन लोगों को तुम्हारे अधिकार में कर दिया है, जिन लोगों ने राजा के खिलाफ़ हाथ उठाया था।” 29 तभी राजा पूछ बैठा, “क्या अबशालोम ठीक है?” अहिमास का जवाब था,“जब योआब ने राजा के सेवक अर्थात मुझे तेरे दास को भेजा,उस वक्त मैंने बड़ी हलचल देखी थी, लेकिन मैं समझ न सका कि वहाँ हुआ क्या।” 30 राजा ने आदेश दिया,“थोड़ा हटो और यहीं खड़े रहो।” और उसने ऐसा किया भी। 31 तभी वहाँ कूशी भी आ गया और बोला,“मेरे राजा और मालिक, एक अच्छी खबर सुनाता हूँ।जो लोग आपकी खिलाफ़त करने उठ खड़े हुए थे, उनसे प्रभु ने आपको छुड़ा लिया है।” 32 तब राजा का सवाल था, “क्या अबशालोम ठीक- ठाक है?” कूशी ने उत्तर दिया,“राजा के सभी दुश्मनों की हालत उस अबशालोम की तरह हो।” 33 यह सुनते ही राजा घबरा गया और रोते-रोते ऊपरी कमरे की ओर चढ़ने लगा। वह कहता गया,“हाय मेरे बेटे, अबशालोम, काश तुम्हारी जगह मैं मर गया होता।”

19 योआब को खबर लग गई कि दाऊद राजा बहुत रो-धो रहा है। 2 इसलिये लोगों के लिये उस दिन की जीत का कोई मतलब न रहा। 3 उस दिन लोगों के मुँह इस तरह उतरे हुए थे, मानो युद्ध में हार गए हों। 4 राजा अपना मुँह ढाँपे रोता रहा,“हाय मेरे बेटे अबशालोम!” 5 योआब जाकर दाऊद से बोला,“तुमने आज उन सभी लोगों के मुँह को शर्म से ढाँक दिया है, जिन्होंने तुम्हारी,तुम्हारे बेटे- बेटियों, तुम्हारी पत्नियों और रखैलों की जान बचाई है, 6 क्योंकि तुमने अपने दुश्मनों से प्रेम और प्रेम करने वालों से नफ़रत की है।आज तुमने दिखा दिया है,कि सेनापति और जो तुम्हारे लिये बफ़ादार थे उनकी कोई कीमत नहीं है।ऐसा भी लगता है कि यदि आज अबशालोम ज़िन्दा होता और हम सभी ने अपनी जान गँवाई होती तब तुम खुश होते। 7 इसलिये बाहर जाकर अपने लोगों को शान्ति दो। यदि तुम ऐसा नहीं करोगे तो लोग तुम से नाराज़ हो जाएँगे और तुम पर ऐसी मुसीबत आ पड़ेगी जैसी आज तक नही पड़ी थी।” 8 यह सब सुनने के बाद राजा उठा और जाकर फ़ाटक पर बैठ गया, तभी सब लोग राजा के पास आए। दूसरे तमाम लोग अपने-अपने तम्बू में चले गए। 9 इस्राएल के सभी कबीलों के लोग कहने

लगे, “राजा ने उन्हें दुश्मनों और पलिश्तियों
के हाथ से छुड़ाया था, लेकिन अबशालोम
से डर कर भाग गया। 10 हमने अबशालोम
को अभिषेक करके राजा बनाया था, लेकिन
वह मर गया. अब राजा को वापिस लाने के
बारे में क्यों चुप हो?” 11 तब दाऊद राजा
ने सादोक और एब्यातार पुरोहित को संदेश
पहुँचाया,“यहूदा के बुज़ुर्ग लोगों से यह कहो:
राजा को भवन में लाने के लिये तुम लोग
ज़्यादा दिलचस्पी क्यों नहीं दिखा रहे हो?
देखो, पूरे इस्राएल का इरादा राजा को मालूम
हो चुका है। 12 तुम लोग मेरे भाई हो और मेरी
हड्डी और मेरा मांस, फिर राजा को वापस
लाने में रुचि क्यों नहीं है? 13 फिर अमासा
से कहो,“क्या तुम मेरी हड्डी और मांस नहीं?
यदि तुम योआब के बदले हमेशा के लिये
मेरे सेनापति न बने, तो प्रभु मुझ से वैसा ही
वरन उस से भी ज़्यादा करे। 14 इस तरह उसने
यहूदा के सभी लोगों को अपनी ओर कर
लिया, जिस से उन लोगों ने राजा को कहला
भेजा,“अपने सभी कर्मचारियों के साथ तुम
लौट आओ।” 15 तब राजा लौटकर यर्दन
तक आ गया और यहूदा के लोग गिलगाल
तक गए,ताकि राजा से मिलें और उसे यर्दन
पार ले आएँ। 16 यहूदा के आदमियोंके साथ
बहूरीम- वासी बिन्यामीनी गेरा का बेटा शिमी
भी जल्दी से आ गया ताकि राजा से मुलाकात
करे। 17 उसके साथ एक हज़ार बिन्यामीनी
आदमी थे, जिनमें शाऊल के घराने का सीबा
भी अपने पन्द्रह बेटों और बीस सेवकों के
साथ था।वे सभी यर्दन पर जल्दी से राजा
के सामने पहुँचे। 18 फिर वे घाट पार करते
गए जिससे राजा का परिवार पार उतर जाए
और जो जो काम उसकी निगाह में सही
है उन्हें किया जाए । लेकिन जैसे ही राजा
यर्दन पार करने के लिये आगे बढ़ा , गेरा
का बेटा शिमी उसके पैरों पर आकर गिर
पड़ा, 19 और राजा से बोलने लगा,“मालिक,
मुझे दोषी न ठहराईए, न ही मेरी उस गलती
को याद कीजिये, जो मैंने की थी, जब आप
यरूशलेम से निकले थे. आप उस बात को
बिल्कुल भूल ही जाईये। 20 मैं आपका दास
हूँ और मैंने उचित नहीं किया, इसलिए देखिये
केवल मैं ही हूँ, जो यूसुफ के घराने से सबसे
पहले आया हूँ आया हूँ । 21 लेकिन सरूयाह
के बेटे ने जवाब दिया,“शिमी ने तो प्रभु के
अलग किये हुए जन को बुरा- भला कहा
था।क्या इस वजह से उसे मौत की सज़ा न
दी जाए?” 22 तब दाऊद ने कहा,“सरूयाह
के बेटो,“तुम लोग मेरी खिलाफत क्यों कर
रहे हो? क्या इस्राएल में आज किसी को मौत
की सज़ा दी जानी चाहिये? क्या मुझे यह
मालूम नहीं है कि मैं इस्राएल का राजा हूँ?
23 फिर राजा बोला,“तुम्हें मारा नहीं जाएगा
। इस बात का वायदा राजा ने किया। 24 तब
शाऊल का पोता मपीबोशेत दाऊद से मिलने
आया। राजा के चले जाने के बाद वापस
लौट आने तक उसने अने पैर की परवाह
नहीं थी।उसने नही दाढ़ी बनवाई थी और
न ही कपड़े धोए थे। 25 जब वह यरुशलेम
से राजा से मुलाकात के लिए आया , तब
राजा ने पूछा,” हे मपीबोशेत, तुम मेरे साथ
क्यों नहीं गए?” 26 उसने उत्तर दिया,” मेरे
मालिक , मेरे सेवक ने मुझे धोखा दिया।
मेरा इरादा यह था कि मैं गदहे पर चढ़कर
आऊँगा, क्योंकि मैं अपाहिज हूँ । 27 इसके
अलावा उसने मेरे स्वामी राजा के सामने मुझ
दास की झूठी बुराई की है, लेकिन आप प्रभु
के दूत की तरह हैं। इसलिये जो आप को
अच्छा लगता है, आपकीजिये। 28 मेरे पिता
का पूरा घराना मरे हुओं की तरह था, लेकिन
फिर भी आपने अपने दास को अपनी मेंज़ पर

बैठा कर खाना खिलाया। अब मुझे कोई हक
नहीं कि कुछ कहूँ। 29 इसलिए राजा ने उससे
कहा," तुम अपनी बात ही क्यों हाँकते रहते
हो? मेरा आदेश यह है कि तुम और सीबा
उस ज़मीन को आपस में बाँट लें।" 30 तब
मपीबोशेत बोला, "मेरे मालिक और राजा
आप तो वापस राजमहल में लौट आए हैं,
सारी ज़मीन सीबा ही को ले लेने दीजिए।"
31 उसी समय गिलादी बर्जिल्लै भी वहाँ आ
गया। वह राजा को उसके साथ चलकर
यर्दन पार कराना चाहता था। 32 बर्जिल्लै की
उम्र अस्सी साल थी। जब तक राजा महनैम
में था, तब तक उसने राजा के खाने का
इन्तज़ाम किया। वह एक अमीर आदमी था।
33 राजा ने बर्जिल्लै से कहा,"मेरे साथ तुम
पार चलो। तुम मेरे साथ ही रहना और मैं
तुम्हारा सारा इन्तज़ाम करूँगा।" 34 बर्जिल्लै
बोला,"मेरा और कितना जीवन बाकी है
कि मैं राजा के साथ यरूशलेम जाऊँ और
वहाँ रहूँ? 35 मैं अस्सी साल का तो हो चुका
हूँ। कुछ भी हो फ़र्क क्या पड़ता है? खाने
के स्वाद का अब कोई मतलब नहीं, न
ही संगीत के स्वरों का। मैं आपके ऊपर
बोझ नहीं बनूँगा। 36 मैं यर्दन नदी के पार
तक ही आपके साथ चलूँगा। 37 मैं ज़िन्दगी
के बाकी दिन अपने नगर ही में बिताना
चाहूँगा, फिर भी किम्हांम यहीं रहेगा। वही
आपके साथ पार जाए।फिर आपको जैसा
अच्छा लगे आप करना।" 38 तब राजा ने
कहा,"हाँ, किम्हांम मेरे साथ जा सकेगा और
जो तुम चाहो, मैं उसके लिये और तुम्हारे लिये
करूँगा।" 39 फिर सभी लोग और राजा यर्दन
पार उतर गए । उसके बाद राजा ने बर्जिल्लै
को चूमते हुए आशीर्वाद दिया। 40 तब राजा
और किम्हांम पार करने के बाद गिलगाल
की ओर बढ़े। इसके बाद यहूदा के सभी
लोग और इस्राएल के आधे लोग भी चले।
41 इस्राएल के सभी आदमी राजा से आकर
कहने लगे,"क्या कारण है कि यहूदी भाई
आपको लुके छुपे यहाँ ले आए हैं। यही नही,
राजा के घराने के लोगों को भी ले आए हैं?"
42 तब यहूदा के सभी पुरुषों ने इस्राएल के
पुरुषों को उत्तर दिया,"राजा हमारे गोत्र का
है, तुम्हें चिढ़ने की ज़रूरत नहीं।क्या राजा ने
हमें कुछ दिया है?" 43 इस्राएल के पुरुषों ने
यहूदा के लोगों को जवाब दिया," राजा में
हमारे दस हिस्से हैं, जो कि ज़्यादा है, फिर
तुम हमें कम क्यों समझ रहे हो? क्या राजा
को लौटा लाने के बारे में हमने न कहा था?"
लेकिन यहूदा के पुरुषों से और भी कड़ी बातें
कहीं।

20 अचानक वहाँ शीबा नामक एक
बिन्यामीनी आदमी आ पहुँचा। वह
बिक्री का बेटा था। नरसिंगा फूँक कर वह
बोला,"दाऊद में हमारा कोई हिस्सा नहीं है,
न ही यिशै के बेटे के साथ कोई मीरास है, हे
इस्राएलियों, अपने-अपने तम्बू में चले जाओ।
2 इसलिए इस्राएल के सभी आदमी दाऊद
को छोड़ बिक्री के बेटे शीबा के पीछे चल
दिए। लेकिन यहूदा के लोग दाऊद के साथ
साथ रहे। 3 फिर दाऊद यरूशलेम में अपने
घर आया। तब राजा जिन दस रखैलों को घर
की देखभाल करने छोड़ गया था, उन्हें पहरे
के लिए रखा और उनकी ज़रूरतें पूरी करता
रहा। उसने उसके साथ शारीरिक सम्बन्ध न
रखा। इसलिए वे अपनी मौत के वक्त तक
विधवा सा जीवन बिताती रहीं। 4 एक दिन
राजा ने अमासा से कहा,"यहूदा के आदमियों
को तीन दिन के अन्दर मेरे पास आने को
कहा और तुम भी यही रहना।" 5 इसलिए
अमासा उन्हें बुलाने गया, लेकिन समय से
ज़्यादा वक्त वहाँ रह गया। 6 तब दाऊद ने

अबीशै से कहा, अब बिक्री का बेटा शीबा अबशालोम से ज़्यादा नुकसान पहुँचाएगा। इसलिए उसका पीछा करो, कही ऐसा न हो कि वह अपने लिए किले बन्द नगर देखकर हमारी नज़र से बच न जाए।" 7 इसलिए योआब के साथियों ने उसका पीछा करना शुरु किया। उसके साथ करेती, पलेती और दूसरे बहादुर लोग चल पड़े। वे सभी मिलकर बिक्री के बेटे शीबा को पकड़ने यरूशलेम से चल पड़े। 8 जब वे गिबोन के बड़े पत्थर के पास पहुँचे, तो अमासा उनसे मिलने आया। योआब फौजी कपड़े पहने हुआ था। उसने कमर में पटुका भी लगा रखा था। उसके पास तलवार भी थी। उसके आगे बढ़ते ही वह नीचे गिर पड़ी। 9 तब योआब ने अमासा से कहा,"क्या तुम ठीक हो, भाई?" फिर योआब उसे आलिंगन (गले मिलने) के लिए आगे बढ़ा। 10 लेकिन अमासा ने योआब के हाथ की तलवार पर ध्यान न दिया। योआब ने उस पर वार कर दिया और वह मर गया। तब योआब और उसके भाई अबीशै ने शीबा का पीछा किया। 11 योआब का एक जवान उसके पास खड़ा होकर कहने लगा,"जो कोई योआब और दाऊद की ओर है, वह योआब के पीछे आ जाए। 12 तभी अमासा खून से सना ज़मीन पर पड़ा हुआ था। जब उस आदमी ने देखा कि,"सभी वहाँ रूक रहे हैं, तब उसने असामा की लाश को खेत में डाल दिया और कपड़े से ढाँक दिया। 13 जैसे ही उसकी लाश वहाँ से हटायी गई, सब लोग शीबा को पकड़ने योआब के साथ हो लिए। 14 वह इस्राएल के सभी कबीलों से होता हुआ बेतमाका के आबेल और सब बेरियों के देश तक पहुँचा। वे लोग भी उसके साथ हो लिए। 15 तब उन्होंने बेत-माका के आबेल में आकर उसे घेर लिया। फिर नगर के पास एक टीला रखा। यह षहर पनाह से सटा हुआ था। इसके बाद योआब के लोग षहरपनाह को ढाने में लग गए। 16 तभी एक अक्लमन्द महिला चिल्ला उठी,"योआब को मेरे पास भेजो, मैं कुछ बात करना चाहती हूँ। 17 उसके वहाँ जाते ही उसने कहा, "क्या तुम योआब हो?" योआब ने जवाब दिया, "हाँ" 18 महिला बोली, "पुराने समय में कहा जाता था कि आबेल में लोग सलाह ज़रूर माँगेंगे।" इस तरह उन में मेल हो जाया कराता था। 19 मैं मेल के पक्ष में हूँ। तुम इस्राएल के ऐसे इलाके को बर्बाद करना माँग रहे हो, जो माँ की तरह है। तुम प्रभु के लिए स्थान को क्यो हथियाना चाहते हो।" 20 योआब का कहना था,"मैं नहीं इस जगह को बर्बाद करना चाहता हूँ न हथियाना। 21 एप्रैम के शीबा नाम के एक आदमी ने दाऊद के खिलाफ़ बलवा किया है। यदि वह मुझे मिल जाए, मैं चला जाऊँगा।" महिला ने कहा, "उसका सिर दीवार से बाहर फेंक दिया जाएगा।" 22 तब वह महिला बड़ी समझदारी से लोगों के पास गई और उसका सिर काटकर योआब के पास फेंक दिया। तभी नरसिंगा फूँका गया, जिसे सुनकर सभी ने नगर छोड़ दिया और योआब यरूशलेम आ गया। 23 योआब इस्राएली फौज का मुखिया था। याहोयादा का बेटा बनायाह करेतियों और पलेतियों का। 24 अदोराम बेगारों के ऊपर था और अहीलूद का बेटा यहोशापात इतिहस लिखने वाला। 25 सादोक ओर एब्यातार पुरोहित थे और शवा एक मन्त्री। 26 याईरी ईरा भी पुरोहित था।

21 दाऊद के दिनों में लगातार तीन साल तक आकाल पड़ता रहा। एक दिन उसने प्रभु से प्रार्थना की। प्रभु का

जवाब था,“आकाल पड़ने का कारण है,
शाऊल द्वारा गिबोनियों की निर्मम हत्या।”
2 इसलिये राजा ने उनसे बात करने के लिए
बुलाया। गिबोनी लोग बचे हुए एमोरियों
में से थे। इस्राएलियों ने उनसे वायदा
किया था। लेकिन इस्राएलियों और यहूदियों
के लिये जोश के कारण शाऊल उन्हें
मार डालना चाहता था। 3 गिबोनियों से
दाऊद ने पूछा,“तुम लोगों के लिये मैं क्या
करूँ? मैं कैसे प्रायश्चित्त करूँ, ताकि तुम
लोग हमें आशीष दे सको?” 4 तब गिबोनी
बोले,“शाऊल या उसके परिवार से हमारा
सोने चाँदी का झगड़ा नहीं है न ही हम
इस्राएल के किसी जन को फांसी दे सकते
हैं।” और उसने कहा,” जो तुम मुझ से कहो,
वही मैं करूँगा।” 5 इसलिये उन लोगों ने राजा
से कहा,“जिस इन्सान ने हमें बर्बाद किया
, जिसने हमारे खिलाफ़ योजना बनाई ताकि
हमारा नामों-निशां मिट जाए, 6 उसी के वंश
से हमें सात लोग दिए जाएँ। हम उन्हें प्रभु के
चुने हुए शाऊल के गिबा में ही लटका देंगे।”
राजा ने उनको सौंपने का वायदा भी किया।
7 लेकिन राजा ने शाऊल के पोते मपीबोशेत
को प्रभु की उस वाचा के कारण बचा लिया,
जो शाऊल के बेटे योनातान के बीच बाँधी
गई थी। 8 अत: अय्या की बेटी रिस्पा के दो
बेटों अर्मोनी और मपीबोशेत को, जो शाऊल
से पैदा हुए थे,तथा शाऊल की बेटी मेरेब
के पाँच बेटों को जो मोहलती वर्जिल्लै के बेटे
अद्रीएल से उत्पन्न हुए थे, पकड़वा लिया,
9 और उसने उनको गिबोनियों के सुपुर्द कर
दिया। उन लोगों ने उन्हें पहाड़ पर लटका
दिया और वे सब मर गए। यह सब जौ की
कटनी से पहले हुआ। 10 तब अय्या की बेटी
रिस्पा ने कटनी के शुरु से जब तक बरसात
नहीं हुई तब तक टाट लेकर चट्टान पर बिछा
रखा। रात में जानवर और दिन में पक्षी उसे
छू न सके। 11 तब दाऊद को वह सब बताया
गया जो रिस्पा ने किया था 12 और दाऊद
ने जाकर शाऊल और योनातान की हड्डियों
को गिलादी याबेश के लोगों से ले लिया,
जिन्हें बेतशोन चौक से चुराया गया था,जहाँ
पलिश्तियों ने उन्हें उस दिन टाँगा था, जब
उन्होंने शाऊल को गिल्बो पहाड़ पर मार
डाला था। 13 तो वह वहाँ से शाऊल और
उसके बेटे की हड्डियाँ ले आया; और जिन्हें
फाँसी दी गई थी, उनकी भी हड्डियाँ इकट्ठी
की गईं। 14 और शाऊल और उसके बेटे
योनातान की हड्डियाँ बिन्यामीन देश के जेला
में शाऊल के पिता कीश के कब्रिस्तान में
गाड़ी गईं; और दाउद के सब आदेशों के
मुताबिक काम हुआ। 15 पलिश्तियों ने फिर
से इस्राएल से लड़ाई की और दाऊद अपने
साथियों के साथ लड़ने गया, लेकिन वह
थक गया। 16 तब यिशबोबनोब जो रपाई
के वंश का था, और उसके भाले का फल
तौल में तीन सौ शेकेल का था, और वह
नई तलवार बान्धे हुए था , उसने दाऊद को
मारने का इरादा किया। 17 लेकिन सरूयाह
के बेटे अबीशै ने दाऊद की मद करके उस
पलिश्ती पर ऐसा वार किया, कि उसकी
मौत हो गई। तब दाऊद के साथियों ने उस
से कहा, तुम हमारे साथ लड़ाई में न जा
सकोगे, कहीं ऐसा न हो कि आपके मरने
से इस्राएल का दीपक बुझ जाए। /18 इसके
बाद गोब में पलिश्तियों के साथ जंग हुई।
उस वकत हूशाई सिब्बकै रपाईवंशी सप
की जान ले ली। 19 गोब में पलिश्तयों के
साथ फिर लड़ाई हुई;उसमें बेतलेहेमवासी
यारयोरगीम के बेटे अल्हनान ने गती गोल्यत
को खतम किया, जिसके बर्छे की छड़ जुलाहे
की डोंगी की की तरह थी। 20 फिर गत

में भी जंग हुई। वहाँ एक हट्टा-गट्टा आदमी
था, जिसके एक- एक हाथ- पांव में छै:
छै: उँगलियाँ थीं।/21 जब उसने दाऊद को
ळकारा, तब दाऊद केभाई शिमा के बेटे
होनातान ने उसका वध किया। 22 ये सभी
गत में उस रपाई से पैदा हुए थे और वे दाऊद
और उसके लोगों से मारे गए।

22 जब प्रभु ने दाऊद को शाऊल और
दूसरे दुश्मनों से छुड़ा लिया, उसने
यह गीत गाया। 2 "प्रभु मेरी चट्टान, मेरे किला
और मुझे छुड़ाने वाले हैं। 3 मैं उन्हीं में शरण
लेता हूँ। वह मेरी ढाल, उध्दार का सींग
मेरे मजबूत किले और मेरी पनाह हैं। हे मरे
बचाने वाले आप ही मुझे मार-पीट से बचाते
हैं। 4 प्रभु बड़ाई के लायक हैं और उन्हें मैं
पुकारता हूँ और अपने दुश्मनों से बचाया
जाता हूँ। 5 क्योंकि मौत की लहरों ने मुझे घेर
लिया है। बर्बादी की तेज लहरों ने मुझे डरा
दिया है। 6 अधोलोक जंजीरों ने मुझे चारों
ओर से जकड़ लिया है। मौत के फन्दे मेरे
सामने आ पड़े। 7 मुसीबत के वक्त मैंने प्रभु
को पुकारा। मेरी गिडगिड़ाहट उनके कानों
में पड़ी और मेरी सुन भी ली। 8 तब पृथ्वी
डोली और काँप भी गयी। आकाश की नेवें
थरथराई और काँप उठी क्योंकि उन्हें गुस्सा
आया था। 9 उनके नथनों से धुआँ निकला
और मुँह से आग निकल कर भस्म करने
लगी, जिससे कोयले धधक गए। 10 आकाश
को नीचे झुका कर वह उतर आए। उनके
पैरो के नीचे घोर अन्धेरा था। 11 वह करूब
पर सवार होकर उड़े। यहाँ तक कि हवा
के पंखों पर प्रकट हुए। 12 उन्होंने अन्धेरे
को, हाँ पानी भरे बादलों को, वरन आकाश
की काली घटाओं को अपने चारों ओर तम्बू
बनाया। 13 उनकी मौजूदगी के तेज से आग
के अँगारे धधक गए। 14 प्रभु आकाश से
गरजे और उनकी आवाज़ सुनायी दी। 15 तीर
चलाकर उन्होंने सभी को तितर बितर किया
और बिजली गिराकर उन्हें खदेड़ा। 16 तब
प्रभु की डाँट से और नथनों की सांस के झोंके
से, समुन्दर का तल दिखाई देने लगा। दुनिया
की नींव उखाड़ दी गई। 17 सबसे ऊँची जगह
से उन्होंने हाथ बढ़ाया और मुझे संभाला
मुझे अथाह पानी में से खींच लिया। 18 मेरे
ताकतवर दुश्मन से और जो मुझसे ज़्यादा
ताकतवर थे, मुझे छुड़ा लिया। 19 उन्होंने
मेरी मुसीबत के समय मेरा सामना तो किया,
लेकिन याहवे मेरा सहारे थे। 20 उसने मुझे
निकालकर चौड़ी जगह पहुँचा दिया, उन्होंने
मुझे छुड़ाया, क्योंकि वह मुझ से खुश थे।
21 याहवे ने मेरी सच्चाई और ईमानदारी के
अनुसार मुझ से बर्ताव किया, मेरे कामों की
शुद्धता के अनुसार उन्होंने मुझे बदला दिया।
22 क्योंकि मैं याहवे के रास्तों पर चलता रहा,
और अपने परमेश्वर से मुँह मोड़कर दुष्ट न
बनाएँ। 23 उनके सारे निर्देश मेरी आँखों के
सामने थे और मैं उन से टस से मस न हुआ।
24 मैं उनके साथ खरा बना रहा और अनुचित
कामों से अपने आप को बचाए रहा, जिन
में आसानी से फँस सकता था। 25 इसलिए
याहवे ने मुझे मेरी ईमानदारी- सच्चाई के
अनुसार किया, मेरी उस शुद्धता के मुताबिक
जिसे वह देखते थे। 26 जो इन्सान दयालु है,
उसके लिए आप दयालु हैं; खरे इन्सान के
साथ आप अपने को खरा दिखाते हैं। 27 शुद्ध
इन्सान के साथ आप अपने को शुद्ध दिखाते
हैं और टेढ़े के साथ आप तिरछे बन जाते
हैं। 28 आप दीन लोगों को आप बचाते हैं,
लेकिन घमण्डियों पर नज़र करके उन्हें नीचा
करते हैं। 29 हे याहवे, आप ही मेरे दीपक
हैं और आप ही मेरेअन्धेरे को दूर करके

उजियाले में बदल देते हैं। 30 आपकी मदद
से मैं झुन्ड पर हमला बोल देता हूँ। अपने
परमेश्वर की सहायता से मैं शहरपनाह को
फांद लेता हूँ। 31 परमेश्वर के तरीके बिल्कुल
साफ सुथरे हैं। उनका वचन ताया हुआ है वह
अपने शरणागतों की ढाल हैं। 32 याहवे को
छोड़ क्या कोई ईश्वर है? हमारे परमेश्वर
को छोड़ क्या कोई और चट्टान है? 33 यह
वही परमेश्वर हैं जो मेरे बहुत मज़बूत किले
हैं। वह खरे इन्सान को अपने रास्ते में ले
चलते हैं। 34 वह मेरे पैरों को हिरणी की तरह
बना देते हैं और मुझे ऊँची जगह पर खड़ा
करते हैं। 35 वह मेरे हाथों को युद्ध करना
सिखाते हैं यहाँ तक कि मेरी बांहें पीतल
के धनुष को झुका देती हैं। 36 आपने मुझे
मुक्ति की ढाल दी है और आपकी नम्रता
मुझे बढ़ाती है। 37 आप मेरे पैरों के लिए
जगह को चौड़ा करते हैं और मेरे पैर फिसले
नहीं। 38 मैंने अपने शत्रुओं का पीछा करके
उन्हें बर्बाद कर डाला, जब तक उन्हें खतम
न किया तब तक लौटा नहीं। 39 मैंने उन्हें
ऐसा छेदा है कि वे उठ ही नहीं सकते। वे
मेरे पाँव के नीचे गिरे पड़े हैं। 40 आपने मेरे
युद्ध के लिए मेरी कमर को मज़बूत किया
है। मेरा विरोध करनेवालों को मेरे सामने
ही हराया है। 41 आपने मेरे दुश्मनों की पीठ
मुझे दिखाई, ताकि मैं उन्हें काट डालूँ।
42 उन्होंने इन्तज़ार तो किया, लेकिन कोई
बचानेवाला मिला नहीं, उन्होंने याहवे की
प्रतीक्षा की, लेकिन उन्हें कोई जवाब न
मिला। 43 फिर मैंने उनको कूट-कूटकर मिट्टी
का सा कर डाला। मैंने उन्हें गली- कूचों के
कीड़ की तरह पटककर चारों ओर फैला
दिया। 44 फिर आपने मुझे प्रजा के झगड़ों
से छुड़ाकर अन्यजातियों का प्रधान होने के
लिए मेरी रक्षा की, जिन लोगों को मैं जानता
था, वे भी मेरे अधीन हो जाएँगे। 45 परदेशी
मेरी चापलूसी करेंगे, वे मेरा नाम सुनते ही
मेरे वश में आएँगे। 46 परदेशी मुर्झाएँगे, और
अपने कोठों में से थरथराते हुए निकालेंगे।
47 याहवे जीवित हैं, मेरी चट्टान धन्य है,
और परमेश्वर जो मेरी मुक्ति की चट्टान हैं,
उनकी बड़ाई हो। 48 धन्य हैं मेरे बदला लेने
वाले ईश्वर, जो देश- देश के लोगों को मेरे
वश में कर देते हैं, 49 और मुझे मेरे दुश्मनों
के बीच से निकालते हैं, हाँ, आप मुझे मेरे
विरोधियों से ऊँचा करते हैं, और उपद्रवी
पुरुष से बचाते हैं। 50 इस कारण, हे याहवे,
मैं देश देश के सामने आपका शुक्रिया करूँगा
और आपके नाम का भजन गाऊँगा। 51 वह
अपने ठहराए हुए राजा का बड़ा उद्धार करते
हैं, वह अपने अभिषिक्त दाऊद, और उसके
वंश पर युगानुयुग करुणा करते रहेंगे।

23 जीवन के आखिरी दिनों में दाऊद ने
जो कहा वह यह है:“यिशै के बेटे
दाऊद की, अर्थात जिस इन्सान को इज्ज़त
दी गई, जिसे याकूब के प्रभु ने अलग किया।
वह इस्राएल में सुरीला गीत गाने वाला था।
2 मुझ में होकर प्रभु का आत्मा बोला, उन्हीं
की कही बात मेरी जीभ पर थी। 3 इस्राएल
के प्रभु बोले, इस्राएल की चट्टान (प्रभु) ने
मुझ से कहा,“जो लोगों के ऊपर सच्चाई और
ईमानदारी के शासन करता है, जो प्रभु को
सम्मान देता है। 4 वह सुबह के सूरज की
रोशनी की तरह होता है। ऐसी सुबह जब
बादल न हो और बरसात के बाद धूप से
मुलायम घास ज़मीन से निकलती है। 5 क्या
मेरा परिवार प्रभु की निगाह में ऐसा ही नहीं
है। उन्होंने मेरे साथ सदा के लिए यह सम्बन्ध
बना लिया है, वह बना ही रहेगा। क्योंकि

चाहे वह उसे प्रगट न करे, फिर भी मेरा पूरा
उद्धार और मेरी पूरी मनोकामना का विषय
वही हैं। 6 लेकिन शैतान (बलियाल) के लोग
काँटों की तरह फेंक दिए जाएँगे, क्योंकि उन्हें
हाथ में नहीं लिया जा सकता। 7 लेकिन उन्हें
छूने वाला व्यक्ति लोहे की छड़ और भाले
के डण्डे से सजा हो। तब वे अपनी ही जगह
आग से जला दिए जाएँगे। 8 दाऊद के वीरों
के नाम ये हैं, तहकमोनी योशेब-बश्शबेत, जो
सेनापतियों के ऊपर था। उसे ऐसी अदोनी
नाम से भी जाना जाता है। उसने एक ही वक्त
में आठ सौ लोगों को मार दिया था। 9 फिर
अहोही दौदै का बेटा एलीआज़ार था। वह
तीन बहादुर लोगों में से एक था, जिन्होंने
मिलकर युद्ध के लिए इकट्ठे हुए पलिश्तियों
को चुनौती दी थी, जब इस्राएल डर कर भाग
खड़े हुए थे। 10 वह पलिश्तियों पर तब तक
हावी रहा, जब तक थक कर हाथ तलवार
से चिपक नहीं गई। उस दिन प्रभु ने उन्हें
बड़ी जीत दिलाई। उसके बाद लोगो ने खूब
सामान लूटा। 11 शम्मा हरारी आगे का बेटा
था। पलिश्ती एक जगह इकट्ठे हुए, जहाँ मसूर
का खेत था। वहाँ लोग पलिश्तियों से डर
कर भाग खड़े हुए। 12 लेकिन यह वहाँ डटा
रहा और उसकी रक्षा की। साथ ही उसने
पलिश्तियों पर हमला भी किया। प्रभु ने जिता
भी दिया। 13 तब तीस प्रधानों में से तीन
आदमी, कटनी के समय अदल्लाम की गुफा में
दाऊद के पास आए। उस समय पलिश्तियों
की फ़ौज रपाईम नामक घाटी में छावनी डाले
हुए थे। 14 और दाऊद जब पलिश्ती बैतलेहेम
तैनात थे, दाऊद वहीं था। 15 तब दाऊद ने
पूरे मन से कह, “मुझे बेतलेहेम के फाटक
के पास के कुएँ से पानी कौन पिलाएगा?
16 इसलिए वे तीनों बहादुर पलिश्तियों की
छावनी पर टूट पड़े।वे बेतलेहेम के फाटक
से पानी लाए, लेकिन उसने पानी पीने से मना
किया । उसने उस पानी को प्रभु के सामने
अर्घ की तरह उण्डेल दिया, 17 ओर कहा, "
हे प्रभु, मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ? जो लोग
अपनी जान को अपने हाथ मे रख कर गए थे,
क्या मैं उनका खून पी सकता हूँ?” इसलिये
उसने वह पानी न पिया। 18 सरूयाह के बेटे
योआब का भाई अबीशे था, जो कि खास
था। उसने अपने भाले से तीन सौ लोगों को
मार डाला था और मशहूर हो गया था। 19 उन
तीनों में नामी था, इसलिये मशहूर हो गया,
लेकिन उन तीनों के पद तक न पहुँच सका ।
20 यहोयादा का बेटा बनायाह कबसेलवासी
एक बड़ा काम करने वाले का बेटा था। उसने
शेर की सी ताकत रखने वाले दो मोआबियों
को मार डाला और बर्फ के समय उसने एक
गड्ढे में उतरकर एक शेर को मार डाला।
21 फिर उसने एक खूबसूरत मिस्री आदमी को
मार डाला। उसके हाथों में भाला था; लेकिन
बनायाह एक लाठी लेकर उसके पास गया।
उसने मिस्री के हाथ से भाला छीनकर उसी
से उसको मार डाला। 22 ऐसे-ऐसे काम करके
यहोयादा का बेटा बनायाह उन तीनों वीरों
में मशहूर हो गया। 23 वह तीसरे से अधिक
आदरनीय था,लेकिन मुख्य तीनों के पद तक
नहीं पहुँचा।उसको दाऊद ने अपनी सभा का
सदस्य चुना। 24 फिर तीसों में योआब का
भाई असाहेल;बेतलेहेमी दोदो का बेटा ईरा,।
25 हेरोदी शम्मा, और एलीका, पेलेती हेलेस,
26 तकोई इक्केश का बेटा ईरा, 27 अनातोती
अबीएज़ेर, हूशाई मबुन्ने, 28 अहोही सल्मोन,
नतोपाही महरै, 29 एक ओर नतोपाही बाना
का पुत्र हेलेब, बिन्यामीनियों के गिबा
नगर के रीबै का पुत्र हुत्तै, 30 पिरातोनी,
बनायाह, गाश के नालों के पास रहने
वाला हिद्दै, 31 अराबा का अबीअल्बोन,

बहूरीमीअजमावेत, 32 शालबोनी एल्यहबा,
याशेन के वंश में से योनातान, 33 पहाड़ी
शम्मा, अरारी शारार का बेटा अहीआम,
34 अहसबै का बेटा एलीपेलेप्त माका देश
का, गीलोई,अहीतोपेल का बेटा एलीआम,
35 कर्म्मेली हेस्त्रो, अराबी पारै 36 सोबाई
नातान का बेटा यिगाल, गादी बानी,
37 अम्मोनी सेलेक, बेरोती नहरै को सरूयाह
के बेटे योआब का हथियार ढोनेवाला था,
38 येतुम्हारी ईरा, और गारेब, 39 और हित्ती
ऊरिय्याह था: सबकी गिनती सैंतीस होती है।

24 एक बार फिर से प्रभु इस्राएलियों
पर भड़क उठा। दाऊद को ऐसा
लगा कि, इस्राएल और यहूदा के लोगों की
गिनती की जाए। 2 राजा ने अपने सेनापति
योआब को आदेश दिया कि वह दान से
लेकर बेर्शेबा तक लोगों को गिने। 3 योआब
बोला,“आपके जीते जी प्रभु इस संख्या को
सौ गुना बढ़ा दें, लेकिन आप ऐसा करना
क्यों चाहते हैं?” 4 लेकिन राजा के आदेश
को पालन किया जाना ही था। इसलिए
योआब और दूसरे सभी अधिकारी इस काम
में लग गए। 5 उन्होंने यर्दन नदी पार करी
और अरोएक नगर की दाहिनी ओर ठहर
गए। 6 वहाँ से वे गिलाद और तहतीम होदशी
को गए। वहाँ से दान्यान होते हुए सीदोन
पहुँच गए। 7 वहाँ से वे सुर के किले में और
हिब्बियों तथा कनानियों के सभी नगरों को
गए। इसके बाद यहूदा के दक्षिण में बेर्शेबा
तक पहुँचे। 8 इस तरह पूरे देश में नौ महीनों
तक जनगणना का काम चला। 9 इसके बाद
सभी आंकड़े राजा को दिए गए। तलवार
चलाने वाले इस्राएलियों की गिनती आठ
लाख थी और यहूदा में पाँच लाख। 10 गिनती
कर लेने के बाद दाऊद को परेशानी महसूस
हुयी। इसलिए दाऊद बोला,“प्रभु मैं चूक गया
हूँ। मुझे शुद्ध कर दें, क्योंकि यह बेवकूफी
का काम मैंने कर डाला है।” 11 सुबह गाद
नामक नबी को प्रभु ने बताया कि वह दाऊद
से कहे, 12 कि उसके सामने तीन बाते हैं,
किसी एक को वह चुन ले 13 पहली यह कि
तुम्हारे देश में तीन साल तक अकाल रहे,
या तीन महीने तक दुश्मन तुम्हारा पीछा करे
और तुम भागते रहो या तीन दिन तक मरी
फैली रहे। 14 तब दाऊद ने गाद से कहा, “मैं
बड़ी परेशानी में फँस गया हूँ। इन्सान के हाथों
में पड़ने से बेहतर है सृष्टिकर्ता के हाथों में
पड़ना। प्रभु तरस से भरे हुए हैं। 15 इसलिए
प्रभु ने इस्राएल में मरी भेजी और सत्तर हज़ार
लोग मर गए। 16 जब स्वर्गदूत, यरूशलेम
में नरसंहार करने पर था, तब प्रभु को दुख
हुआ। उन्होंने बर्बाद करने वाले स्वर्गदूत को
रूक जाने को कहा। उस वक्त वह दूत यबूसी
अरौना के खलिहान के पास ही था। 17 जब
दाऊद ने उस स्वर्गदूत को देखा, तो बोल
उठा कि प्रभु लोग तो निर्दोष हैं। मुझे और मेरे
पिता के परिवार को सज़ा मिलनी चाहिए।
18 गाद ने दाऊद से आकर कहा,“यबूसी
अरौना के खलिहान में एक वेदी बनाओ।”
19 यह सुन कर दाऊद वहाँ से चला गया।
20 तभी अरौना ने देखा कि दाऊद और उसके
साथी घाटी पार करके उसकी ओर आ रहे
है। तभी अरौना आगे बढ़ा और दाऊद को
दण्डवत् किया। 21 फिर अरौना बोला,“आप
मेरे पास क्यों आए हैं?” दाऊद ने कहा, “मैं
तुमसे यह खलिहान खरीदना चाहूँगा। यहाँ
वेदी बनाकर होमबलि करने से प्रजा के ऊपर
की मरी रूक जाएगी। 22 अरौना दाऊद से
बोला, “आप जो बेहतर समझते हैं कीजिए।,
सारा सामान बलि का यही हैं।” 23 यह सब
कुछ अरौना ने राजा को दे दिया। फिर अरौना

ने राजा से कहा,“ आपके परमेश्वर आपसे
प्रसन्न हो जाएँ। 24 राजा ने इन्कार करते हुए
कहा, “ मैं ये सब कीमत चुकाकर ही लूँगा,
मैं परमेश्वर को ऐसी कुर्बानी नही चड़ाऊँगा,
जिसकी कीमत नहीं चुकाई गई हो। इसलिए
दाऊद ने खलिहान और बैलों को चाँदी
के पचास शेकेल में खरीद लिया। 25 और
दाऊद ने वहाँ याहवे की एक वेदी बनवाकर
होमबलि और मेलबलि चढ़ाई। याहवे ने भी
देश के लिए याचना को सुना, तब वह बीमारी
इस्राएल पर से दूर हो गई।

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com